खिदमते ख़ल्क़ फ़ीसबी लिल्लाह

आईना-ए-हयात

छत्तीसगढ़ बैतुलमाल फ़ाऊण्डेशन

आशियाना, फ़व्वारा चौक, बैरनबाज़ार, रायपुर- 492001

% 0771-2432552

بسم الله الرحمن الرحيم

खिदमते ख़ल्क़ फ़ीसबी लिल्लाह

الصلوۃ والسلام علیک یا رسول الله

अस्सलातौवस्सलामौ अलैकायारसुलुल्लाह

نحمدہ ونصلی علی رسولہ الکریم

नह्मदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम.

छत्तीसगढ़ बैतुलमाल फ़ाऊंडेशन, रायपुर

निशाने सज्दा तेरी जबीं पर हुआ तो क्या। कोई ऐसा सज्दा कर कि ज़मीं पर निशां रहे ॥

इस्लामी मक़ासिद

1. अल्लाह तआला के अहकाम की पैरवी, हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहोअलैहेवसल्लम के फ़रमान और शरीयत के मुताबिक अमल दरामद।
2. ख़ुलूस, दयानतदारी, ख़ौफ़ेख़ुदा के साथ तमाम कामों और ज़िम्मेदारी का अल्लाहतआला के हुज़ूर जवाबदेही का ख़ौफ़ हो।
3. नाम व नमूद, दिखावा, शोहरत का गुमान भी न हो। जो भी ख़िदमत करें ख़ालिस अल्लाह तआला से अजर की निय्यत हो।

फ़ाऊंडेशन के अगराज़ व मक़ासिद

1. यतीम, नादार, बेवा, ग़ुर्बा, मसाकीन, परेशानहाल मुसाफ़िर, माज़ूर, लाचार की हसबे हैसियत मदद।
2. मुस्लिम लड़कियों को जो ग़ुर्बत की वजह से शादी के एख़राजात का इन्तेज़ाम न कर सकें मदद करना।
3. ज़हीन और होशियार बच्चों को तालीम में मदद, फ़ीस, स्कॉलरशीप की फ़रहामी।
4. रज़ाएआम, शिफ़ाख़ाना, लाइब्रेरी, दीनी तालीम के ज़र्राय की उपलब्धता और मेडिकल और तालीमी कैम्प का आयोजन।
5. नागहानी आफ़ात के मवाक़े पर इमदाद, बग़ैर सूदी बैंक और शरिया कोर्ट का क़याम।
6. मिल्लत के लड़के और लड़कियों के लिए रोजगार के मौक़े उपलब्ध करना दस्तकारी व ट्रेनिंग सेंटर बनाना।
7. ब्लड बैंक सुविधा, एम्बुलेंस, पानी टैंकर आदि सुविधाएं उपलब्ध करना व पानी के प्याऊ घर बनाना।
8. मेम्बरों की राय से अन्य फ़लाही कार्य करना।

फ़ाऊंडेशन के आमदनी के ज़राए

1. लोगों से डोनेशन अतियात और वस्तुओं में मदद हासिल करना।
2. ज़कात, सदक़ा, ख़ैरात, चर्म कुर्बानी, वक़्फ़ जायदाद, डोनेशन, इमदाद और आतियात का हासिल करना।

मिल्लते इस्लामियां से अपील

अहले ख़ैर हज़रात बतौर अतियात हस्बेहैसियत कुछ फ़राहम करें। मसलन अतिया बतौर रक़म, ज़रूरियात की अशिया, अपने क़ीमती औक़ात से कुछ वक़्त निकालकर गिरांक़द्र मशवरे से मुस्तफ़ीद फ़रमायें और काम की अंजामदेही में बेलौस ख़िदमत मुहैय्या करायें।

नोट : *ये तमाम मंसूबे बग़ैर किसी मसलक व मिल्लत, बग़ैर किसी ख़ास मक्तबे फ़िक्र, मज़हब व जमात के फ़र्क़ के आम इन्सानी जज़्बे और इन्सानी ख़िदमत के तहत अंजाम दिए जाएंगे।*

आईना-ए-हयात

फ़हरिस्ते मज़ामीन

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
1.	सी.बी.एफ. की कार्यकारिणी	5
2.	सेक्रेटरी रिपोर्ट	8
3.	आय व्यय पत्रक	11
4.	उपलब्धियाँ	12
5.	दुआ	17
6.	हम और हमारे वालदैन	21
7.	बैतुलमाल क्या है ?	23
8.	सर सैय्यद की वज़ह से मुसलमानों की तरक़्क़ी का आग़ाज़ हुआ	27
9.	तालीम में ग़फ़लत के नताइज	28
10.	कुरआन की अहमियत	29
11.	इज्तेमाई नज़्में ज़कात की ज़रूरत	31
12.	इज्तेमाइयत ही इस्लाम की बुनियाद है	33
13.	भारी महर और जहेज़ की ज़्यादती ग़ैर इस्लामी	35
14.	मुस्लिम दौरे हुकूमत की शानदार यूनिवर्सिटियां	37
15.	तराना –ए– मिल्ली	53

छत्तीसगढ़ बैतुलमाल फ़ाउंडेशन की कार्यकारिणी

1.	जनाब हाजी मोहम्मद फ़ारूक़ वारसी	अध्यक्ष
2.	जनाब ज़हीरुद्दीन अहमद सिद्दीक़ी	सदस्य
3.	जनाब हाजी अनवर अली प्रधान	सदस्य
4.	जनाब शराफ़त अली हलधर (अली भाई)	सदस्य
5.	जनाब हाजी अब्दुल ज़लील क़ुरैशी	सदस्य
6.	जनाब हाजी एम.ज़ेड सिद्दीक़ी	सदस्य
7.	जनाब प्रोफ़ेसर मोहम्मद अशफ़ाक़	सदस्य
8.	जनाब रियाज़ अहमद बट्ट	सदस्य
9.	जनाब मोहम्मद रफ़ीक ख़ान	सदस्य
10.	जनाब हाजी क़ाज़ी अदनान	सदस्य
11.	जनाब रज़्ज़ब अली कामदार	सदस्य
12.	जनाब सैय्यद अज़हर अली	सदस्य
13.	जनाब मोईनुद्दीन क़ुरैशी	सदस्य
14.	जनाब अब्बास मोहम्मद क़ुरैशी	सदस्य
15.	जनाब हाजी अनवारुर्रहीम ख़ान	सदस्य
16.	जनाब मोहम्मद अज़ीज़ ख़ान (इरशाद)	सदस्य
17.	जनाब एस.एम. शफ़ी क़ुरैशी	सदस्य
18.	जनाब हाजी एम. इस्माईल शेख़	सदस्य
19.	जनाब एस.यू. ख़ान	सदस्य
20.	जनाब सादिक़ अली (एडव्होकेट)	सदस्य
21.	जनाब सैय्यद ज़ाकिर अली (एडव्होकेट)	सदस्य
22.	जनाब सिराजुद्दीन	सदस्य
23.	जनाब अकरम सिद्दीक़ी	सदस्य
24.	जनाब असलम सिद्दीक़ी	सदस्य
25.	जनाब सैय्यद इफ़्तेख़ार अली	सदस्य
26.	जनाब मोहम्मद ख़ाँ (रिटायर्ड डी.जे.)	सदस्य
27.	जनाब हाजी ए.ज़ेड.जी. ख़ान	सदस्य

छत्तीसगढ़ बैतुलमाल फाउंडेशन बग़ैर किसी मसलक व मिल्लत, बग़ैर किसी ख़ास मक़्तबे फ़िक्र, बग़ैर किसी ज़माते ख़ास के फ़र्क़ के सिर्फ़ और सिर्फ़ मुस्लिम होने के नाते इन्सानी जज़्बे और इन्सानी ख़िदमत के तौर पर ख़िदमत अंजाम दिने का अहद करता है।

छत्तीसगढ़ बैतुलमाल फ़ाउंडेशन के विमेन्स विंग की कार्यकारिणी
वर्ष 2006-2007

1.	डॉ. ज़किया तसनीम ख़ान	कन्वेनर (अस्थायी)
2.	मोहतरमा सईदा अहमद	सदस्य
3.	मोहतरमा साबेरा निक़हत ख़ान	सदस्य
4.	मोहतरमा लुबना जावेदा	सदस्य
5.	मोहतरमा कमरुन्निसा ख़ान	सदस्य
6.	मोहतरमा शाइस्ता रुही	सदस्य
7.	मोहतरमा मिस शबनम ख़ान	सदस्य
8.	मोहतरमा पास्सा ख़ान	सदस्य
9.	मोहतरमा सेहरा सिद्दीक़ी	सदस्य
10.	मोहतरमा ज़रीन रहीम	सदस्य
11.	मोहतरमा रज़िया सिद्दीक़ी	सदस्य
12.	मोहतरमा शमशाद क़ुरैशी	सदस्य
13.	मोहतरमा प्रोफेसर इशरत अफ़गानी	सदस्य
14.	मोहतरमा यास्मीन रिज़वी	सदस्य
15.	मोहतरमा सलमा एख़लाक़	सदस्य
16.	मोहतरमा सुरैय्या लतीफ़ ख़ान	सदस्य

छत्तीसगढ़ बैतुलमाल फ़ाऊण्डेशन का सफ़रनामा

सेक्रेट्री रिपोर्ट

अस्सलामु अलैकुम व रहमत उल्लाह व बरकातुहू,

अलहमदु लिल्लाह । मोहतरिम सद्रे मज़लिस, मेहमाने आला, मेहमाने ख़ुसूसी, ख़्वातीन व हज़रात, छत्तीसगढ़ बैतुलमाल फ़ाउंडेशन की तरफ से आप सबका इस जलसे में जो कि सी.बी.एफ. के पहले सालाना जलसे के तौर पर मुनअक़िद किया जा रहा है, मैं ख़ैर मक़दम करता हूँ इस मौके पर अगर मैं फ़ाउंडेशन के पिछले 17 माह की कारकरदगी का जायजा लेने की कोशिश करूं तो एक तवील वक़्त की ज़रूरत होगी फिर भी आप सबकी याद ताजा करने के लिये सी.बी.एफ. की गुज़िश्ता 17 माह की कारकरदगी पर एक तायराना नज़र के तौर पर यह रिपोर्ट आपके सामने पेशे ख़िदमत है । छत्तीसगढ़ बैतुलमाल फ़ाउंडेशन के कामों का सफ़र दिसम्बर 2005 से मिल्लत के चंद और ज़ीहिस अफ़राद में मिल्लत की तालीमी और मआशी पसमांदगी को मद्देनज़र रख एक मंसूबाबंद तरीका एख़्तेयार करने की जद्दोजहद के तौर पर शुरू किया । इस जिमन में सी.बी.एफ. ने अपने सामने कुछ ऐसे मक़ासिद रखे जिनको हस्बेज़ैल ज़ुमरों में बांटा जा सकता है –

(1) तालीम का ज़्यादा से ज़्यादा फ़ैलाव ।

(2) ख़्वातीन और बच्चों की आर्थिक स्थिति में सुधार का प्रयास ।

(3) समाज के लोगों के लिये स्वास्थ्य संबंधी सेवाओं की उपलब्धता ।

(4) अन्य कार्य जो समय–समय पर सामने आए उन पर कार्यवाही करना ।

(1) तालीम का ज़्यादा से ज़्यादा फ़ैलाव – इस मैदान में हमने शुरू में तालीमी स्कॉलरशिप 5वीं से 10वीं क्लास के बच्चों के लिये शुरू की जिसमें 1200 रुपया 10 माह के लिये चुने हुए तुलबा को दिये जाते हैं । इसमें तुलबा को प्रति माह 120 रुपया की किस्त बैंक में जमा कर तालीम हासिल करने के लिये उनकी हिम्मत अफ़ज़ाई की जाती है । शुरू में हमने अपना काम 5 स्कॉलरशिप्स देकर शुरू किया और 2 माह के ही अंदर हमारे पास 46 स्कॉलरशिप्स की रकम समझदार और जागरूक हज़रात की तरफ़ से हमें हासिल हो गये । इस तरह हमने जुलाई 2006 में तालीमी साल 2006–2007 के लिये 46 स्कॉलरशिप्स 10वीं तक के अलग–अलग स्कूलों के बच्चों को दिया । इसके अलावा 8 स्कॉलरशिप्स हमने ग़ैर मुस्लिम तुलबा को भी जारी किये । इसके फ़ौरन बाद ही हायर सेकेन्डरी, कॉलेज तथा प्रोफ़ेशनल स्कॉलरशिप देने के लिये दबाव बढ़ता गया तो हमने

हायर सेकेन्डरी के लिये 5 स्कॉलरशिप्स प्रति स्कॉलरशिप 1500 रुपया, 5 कॉलेज स्कॉलरशिप प्रति स्कॉलरशिप 2000 रुपया तथा 5 प्रोफेशनल स्कॉलरशिप्स प्रति स्कॉलरशिप 3000 रुपया तय किया जिसका तआवुन हमें हासिल हुआ और इसे हमने तालीमी साल 2006-2007 के लिये जारी कर दिया। अब हमें इस काम में 2007-2008 के लिये लोगों के तआवुन की दरकार है। अभी तक 5 स्कॉलरशिप्स का रुपया हमें लोगों के तरफ़ से अतियात में हासिल हो चुका है।

तालीम के मैदान में हमने दूसरा कदम कांशीराम नगर मोहल्ले को चुनकर वहां सर्वे किया और यह ज़रूरत महसूस की कि वहां एक मदरसा बोर्ड का स्कूल खोला जाना चाहिए। हमने स्कूल का रजिस्ट्रेशन हासिल कर वहां पिछले साल से स्कूल शुरू कर दिये जिसमें आज पहली क्लास में 10 तुलबा और दूसरी क्लास में 7 तुलबा छत्तीसगढ़ मदरसा बोर्ड द्वारा तय सेलेबस में पढ़ाई कर रहे हैं। इसे अगले सालों में हम और बढ़ाना चाहते हैं। इस स्कूल में करीब लगभग 45 तुलबा जिनमें बड़ी उमर की ख़्वातीन, लड़कियाँ व बच्चे हैं अरबी और उर्दू की तालीम भी हासिल कर रहे हैं। मदरसा बोर्ड से स्कूली बच्चों को मुफ़्त कोर्स की किताबें उपलब्ध की गई हैं जो किताबें बोर्ड से नहीं हासिल हो सकी उसे हमने खरीदकर उन्हें दिया। इसी तरह अरबी और उर्दू तालीम के लिये हमने ज़रूरी किताबें भी मुफ़्त में तक़सीम कीं। मदरसा स्कूल के तुलबा के लिये हम स्कूल ड्रेस भी मुफ़्त में तक़सीम करने जा रहे हैं।

तालीम के मैदान में हमने कई बच्चों को जो अपनी स्कूली फ़ीस जमा नहीं कर सकते थे उन्हें ज़कात फंड से स्कूल की फ़ीस जमा की जिन बच्चों को किताबों या कापियों की ज़रूरत थी उन्हें भी हमने खरीदकर मुहैया कराया। हमारा इस मैदान में सबसे बड़ा काम नूरानी स्कूल के 53 गरीब बच्चों की रुपया 16500 फ़ीस जमा करना है, जो वे बच्चे सालभर से जमा नहीं कर पा रहे थे। इसके अलावा भी तालीमी मैदान में हम कोशाँ हैं कि ज़्यादा से ज़्यादा गरीब बच्चे प्रायमरी और मिडिल स्कूल की तालीम के लिये स्कूलों में दाख़िला लें ताकि वे अपना मुस्तक़बिल इल्म की दौलत हासिल करके संवार सकें।

(2) ख़्वातीन और बच्चों की आर्थिक स्थिति में सुधार का प्रयास – ख़्वातीन में अपनी हालत सुधारने का जज़्बा बढ़ाने के लिये हम लगातार कोशिशें कर रहे हैं। इस सिलसिले में सर्वे करने पर यह पाया गया कि ख़्वातीन दिन में अपना फ़ालतू वक़्त अनउत्पादक कामों में जाया करती हैं इसलिये हमने उनके लिये रोजगार उपलब्ध करने के मक़्सद से कई काम किये जिसमें सबसे बड़ा काम फ़ाउंडेशन के सेन्टर पर एक सिलाई सेन्टर बनाया गया। इस सेन्टर में लोगों से स्थायी अथवा अस्थायी रूप से सिलाई मशीनें लेकर प्रशिक्षण शुरू किया आज इस स्कूल में लगभग 25 लड़कियाँ प्रशिक्षण हासिल कर रही हैं। इसी सिलसिले में हम यह भी कोशिश कर रहे हैं जो ख़्वातीन घरों में सिलाई कर

अपना रोज़गार ख़ुद चलाये उनके लिये सिलाई मशीनें भी अपने सीमाओं में रहकर हम देना चाहते हैं। इस संबंध में इस अवसर पर कुछ सिलाई मशीनें भी हम ज़रूरतमंद ख़्वातीन को दे रहे हैं। इस सिलसिले की दूसरी कड़ी कांशीराम नगर में एक सिलाई सेन्टर की स्थापना है जिसमें तीन मशीनों के ज़रिये सेन्टर शुरू किया गया है और आज उसमें 10 लड़कियाँ सिलाई का काम बड़ी मेहनत से सीख रही हैं। इसके अलावा हम लोग बाल विकास विभाग से मार्ग दर्शन प्राप्त करके ख़्वातीन के ग्रुप बनाकर उन्हें रोज़गार उपलब्ध करने के लिये कोशाँ हैं। बच्चों में अच्छी हॉबी का विकास करने के लिये पिछले साल गर्मियों में विमेंस विंग ने समर कैम्प का आयोजन किया था जिसमें करीब 150 बच्चों ने शिरकत की और उसके बहुत अच्छे नताईज़ हमें हासिल हुए। इस ओर भी हम और कार्यवाही करने के लिये प्रयत्नशील हैं। विमेंस विंग द्वारा ख़्वातीन के दिलचस्पी के समाजी काम भी किये जा रहे हैं जिनमें कांशीराम नगर में कुरआन ख़्वानी, संजय नगर में मिलाद, आशियाना, बैरन बाज़ार में हज्जनों का इस्तेक़बाल और ईद मिलादुन्नबी के कार्यक्रम प्रमुख हैं।

(3) समाज के लोगों के लिये स्वास्थ्य संबंधी सेवाओं की उपलब्धता – इस क्षेत्र में हमने काफी काम किया है। हमारा पहला कार्यक्रम नूरानी स्कूल के 350 बच्चों का मेडिकल चेकअप था। इसके बाद हमने ख़्वातीन का मेडिकल चेकअप कैम्प लगाया जिसमें 300 से ज़्याद ख़्वातीन ने अपनी जाँच कराई और उसमें लगभग 10 हज़ार की दवाईयाँ मुफ़्त वितरित की। हमने अपने मेम्बरों से और साहेबेहैसियत लोगों से मुफ़्त चश्मा देने के लिये 125 रुपये फ़ी चश्मा के हिसाब से अतियात हासिल किये और हमें इस सिलसिले में 300 से ज़्यादा चश्मों के अतियात हासिल हुए। इसके बाद हमने लगातार दो आई कैम्प जनवरी और फरवरी 2007 में कराये और 300 चश्में लोगों को उनकी जाँच के बाद हस्बेज़रूरत तक़्सीम किये गये इसके बाद 3 केटेरेक्ट के ऑपरेशन भी बैतुलमाल द्वारा अपने पैसों से कराया गया। इसी मैदान में हमें महाराणा प्रताप होम्योपैथी मेडिकल कॉलेज का सहयोग प्राप्त हुआ और उनके सहभागिता में हमने अपनी जगह उपलब्ध कर होम्योपैथी की ओ.पी.डी. फ़ाउंडेशन के ऑफिस में जुलाई 2006 से शुरू की जिसके लिये हम महाराणा प्रताप होम्योपैथी मेडिकल कॉलेज के डायरेक्टर जनाब डॉ. प्रहलाद जीरानी का बेहद शुक्र गुज़ार हैं। यह दवाख़ाना हर रोज़ सवेरे 9 बजे से 1 बजे तक आशियाना, बैरन बाज़ार में लगता है और इसमें लोगों का मुफ़्त इलाज़ किया जाता है। इसी कड़ी में एक साहेबेइस्तेतात जनाब सिराजुद्दीन साहब ने अपने वालिद के याद में हमारे सामने एक एलोपैथी अस्पताल शुरू करने की तज़वीज़ रखी जिसे फ़ाउंडेशन ने मान लिया और फ़ाउंडेशन के ही ऑफिस में सितम्बर 2006 से एलोपैथी क्लिनिक शुरू की गई जिसका नाम **बी.मोबीनुद्दीन मेमोरियल चेरिटेबल क्लिनिक** है। यह अस्पताल

शाम को 7 बजे से रात के 9 बजे तक लगता है और इसमें मरीज़ों का मुफ़्त इलाज़ और उनके ज़रूरत की दवाईयाँ मुफ़्त दी जाती हैं। इस दवाख़ाने में एक एम.बी.बी.एस. डॉक्टर अयाज़ सिद्दीक़ी वर्तमान में कार्यरत हैं और बड़ी लगन व मेहनत से मरीज़ों का इलाज़ करते हैं। बैतुलमाल इन दोनों हज़रात के जज़्बे की क़द्र करता है और उनके ख़िदमते ख़ल्क़ के लिये किये गये कामों का बहुत-बहुत शुक्रिया अदा करता है। इन दोनों अस्पतालों में क्रमशः होम्योपैथी में 4 हज़ार से अधिक मरीज़ और एलोपैथी में 2 हज़ार से अधिक मरीज़ों ने इन सुविधाओं का फ़ायदा उठाया है। छत्तीसगढ़ बैतुलमाल फ़ाउंडेशन ने एक ब्लड बैंक की स्थापना की है और स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त 2006 को फ़ाउंडेशन के सदस्यों ने ब्लड डोनेशन कर ख़िदमते ख़ल्क के जज़्बे का इज़हार किया है। ब्लड बैंक रायपुर शहर के लोगों की ख़िदमत में मसरूफ़ है और जिस ग्रुप के खून की ज़रूरत होती है ब्लड बैंक उसे पूरा करने की पूरी कोशिश करता है। बैतुलमाल फ़ाउंडेशन ने मरीज़ों की सहूलत के लिये एक एम्बुलेंस भी दान में हासिल की है जो इस काम में लगी हुई है।

(4) अन्य कार्य जो समय-समय पर सामने आए उन पर कार्यवाही - इस मैदान में भी हम लोगों का काम काफी फैल चुका है। रमज़ान के माह में हमने सदक़ए फ़ित्र हासिल कर 240 फ़ितरे के पैकेट शरई ज़रूरत के मुताबिक़ तैयार कर गरीब बस्तियों में तक़्सीम किये। इसी तरह ईदुलअज़हा के मौक़े पर क़ुर्बानी के तबर्रुक़ात भी गरीब मोहल्लों में तक़्सीम किये। हमने लगभग 11 हज़ार रुपये के 240 कंबल फ़ैक्ट्री से खरीदकर गरीब बस्तियों में सर्दियों से पहले तक़्सीम किये ताकि ग़रीबों की ज़रूरत इससे पूरी हो सके। इस काम में हमारे एक मेम्बर जनाब अली भाई का बहुत तआवुन रहा जिनके हम बहुत शुक्रगुज़ार हैं। इसी सिलसिले में एक कड़ी और जुड़ गई जब हमने 15 हज़ार की सलवार सूट व साड़ियाँ तक़्सीम करने के लिये खरीदे जिनमें से कुछ सालाना जलसे में ही तक़्सीम किये जायेंगे। विमेंस विंग के मेम्बरों ने घरों से पुराने कपड़े हासिल कर ऐसे 60 कपड़े माह अक्टूबर 2006 में संजय नगर में गरीबों को तक़्सीम किये। 29 अक्टूबर 2006 को ईद और दिवाली मिलन समारोह का आयोजन किया गया। इसी तरह हज से वापसी पर पिछले साल छत्तीसगढ़ बैतुलमाल फ़ाउंडेशन ने लगभग 60 हाजियों का इस्तेक़बाल भी किया। छत्तीसगढ़ बैतुलमाल फ़ाउंडेशन ने ज़कात, फ़ितरा व सदक़े के मसाईल की आम जानकारी के लिये 3 बुकलेट लोगों में तक़्सीम की ताकि लोग इन मसलों को समझें और उसकी अहमियत जानें। ज़कात फंड से हम लोग लगातार ज़रूरतमंदों की मदद कर रहे हैं जिनकी लिस्ट बहुत लंबी है हमने लोगों की जानकारी के लिये बैतुलमाल फ़ाउंडेशन की उपलब्धियों के पत्रक तक़्सीम किये हैं जिनसे इनकी जानकारी हो सकती है।

हज़रात, छत्तीसगढ़ बैतुलमाल फ़ाउंडेशन का आय और व्यय पत्रक हमने एक

बुकलेट में आम जानकारी के लिये जारी की है। आख़िर में आप सबके सामने हम उन लोगों का दिल की गहराईयों से शुक्रिया अदा करते हैं जिन्होंने हमारे फ़ाउंडेशन के शुरू होने के दिन से आज तक हमें माली मदद की, अपना व्यक्तिगत सहयोग हमें प्रदान किया। इस सिलसिले में हम उन सब डॉक्टरों का शुक्रिया अदा करते हैं जिन्होंने हमारे कैम्प में शामिल होकर बिना किसी फ़ीस के मरीज़ों की जाँच की और हमारा सहयोग किया। हम उन लोगों का भी शुक्रिया अदा करते हैं जिन्होंने हमें माली तौर से अतियात, सदक़ा, फ़ितरा व ज़कात का तआवुन किया।

इसी सिलसिले में हम छत्तीसगढ़ बैतुलमाल फ़ाउंडेशन के सभी मेम्बरों के भी बेहद शुक्र गुज़ार हैं जिन्होंने फ़ाउंडेशन को हर तरह की मदद कर हमारे कार्यक्रमों को अंजाम दिया। ख़ासतौर से हम छत्तीसगढ़ बैतुलमाल फ़ाउंडेशन के ख़्वातीन मेम्बरों के शुक्र गुज़ार हैं जिन्होंने हमारे कार्यक्रमों को कामयाब बनाया।

ख़िदमते ख़ल्क के लिये यह ज़रूरी है कि लोग इज़तेमाईयत (सामूहिकता) की तरफ़ ग़ामज़न हों और न सिर्फ़ एक बैतुलमाल बल्कि शहर के हर मोहल्ले में एक बैतुलमाल होना वक़्त की ज़रूरत है। अगर सभी लोग इज़तेमाईयत की तरफ़ बढ़ेंगे तो साहेबेनिसाब लोग अपना फ़र्ज अतियात व ज़कात देकर पूरा करेंगे और जो ग़रीब गुरबा है उनकी मदद हो सकेगी इस काम को एक मिशन के तौर पर लेना बहुत ज़रूरी है।

यह सब काम जो कि सी.बी.एफ. ने पिछले 17 माह में अंजाम दिये हैं उन पर अमल दरामद जारी है, नामुमकिन थे अगर आप सबका तआवुन हमें मयस्सर न होता। हम इस बात से बख़ूबी वाक़िफ़ हैं कि अभी यह सब काम समुंदर में एक कतरा पानी के मुतरादिफ़ है लेकिन अगर आप सबका तआवुन हमारे साथ रहा, हमें पूरी उम्मीद है कि मुस्तक़बिल करीब में पूरी मिल्लत में एक इंक़ेलाबी तब्दीली रूनुमा होगी और रायपुर में मिल्लत इज़तेमाइयत और तरक़्क़ी की राह पर ग़ामज़न होकर अपने लिये ज़्जित का मुक़ाम हासिल कर सकेगी। इसके लिये हम सब पर यह फ़र्ज़ आयद होता है कि हम सब फ़ाउंडेशन को माली इमदाद, मशवराजात और अमली ख़िदमात से मदद करते रहे ताकि यह इदारा मिल्लत की तामीर में और ज़्यादा मुस्तहक़िम होकर अपना काम फ़आल अंदाज में अंजाम दे।

दिनांक : 22.04.2007 सेक्रेट्री

'किसी हुकूमत के लगाए हुए टैक्स कि अदाएगी से ज़कात साक़ित होती है न उश्र साक़ित होता है। इसलिए कि उश्र व ज़कात एक इबादत है जो अल्लाह ताआला ने फ़र्ज़ की है ये किसी इंसान का लगाया हुआ टैक्स नहीं है।' – सैय्यद अहमद उरूज़ क़ादरी

टेन्टेटीव

छत्तीसगढ़ बैतुलमाल फ़ाउण्डेशन

आशियाना, बैरनबाज़ार, रायपुर (छ.ग.)

आय एवं व्यय पत्रक

(दिनांक 31 मार्च 2007 की स्थिति में)

प्राप्तियां राशि		राशि	ख़र्च		राशि
1. मेम्बरशिप फ़ीस –			1. सीबीएफ़ बुकलेट –1,2,3,	–	13,300.00
(अ) जेंट्स विंग की	–	41,850.00	2. स्टेशनरी एण्ड प्रिंटिंग ख़र्च	–	4,404.00
(ब) लेडीज़ विंग की	–	7,250.00	3. फ़र्नीचर ख़र्च	–	20,500.00
2. ज़कात फ़ंड	–	1,59,798.00	4. ज़कात ख़र्च	–	68,630.00
3. सदक़ा फ़ंड	–	5,470.00	5. सदक़ा ख़र्च	–	1,199.00
4. फ़ितरा फ़ंड	–	13,090.00	6. फ़ितरा फ़ंड ख़र्च	–	9,280.00
5. स्कॉलरशिप फ़ंड	–	61,000.00	7. स्कॉलरशिप	–	57,500.00
6. चश्मा फ़ंड	–	27,430.00	8. चश्मा फंड से खर्च	–	27,430.00
7. एम्बूलेंस फ़ंड	–	10,000.00	9. एम्बुलेंस फ़ंड ख़र्च	–	10,000.00
8. सिलाई प्रमोशन फ़ंड	–	19,500.00	10. सिलाई प्रमोशन ख़र्च	–	18,350.00
9. कम्प्यूटर फ़ंड	–	1,500.00	11. वेतन ख़र्च	–	43,400.00
10. मेडिकल कैम्प	–	11,400.00	12. फ़क्शन एण्ड कैम्प ख़र्च	–	34,489.00
11. एम्बुलेंस से आय	–	6,000.00	13. एम्बुलेंस के खर्चे	–	9,642.00
12. मैरेज रजिस्ट्रेशन फ़ीस	–	1,350.00	14. कैलेण्डर एण्ड कॉर्ड्स ख़र्च	–	3,260.00
13. एक्सग्रेशिया ग्रांट	–	5,000.00	15. अन्य ख़र्च	–	49,070.00
14. बेवा फ़ंड	–	15,100.00	16. स्थापना खर्चे –		
15. वाटर टेंकर फ़ंड	–	40,000.00	(अ) सेन्टर किराया 9 माह का	–	27,000.00
16. सायकल फंड	–	2,000.00	(ब) टेलीफोन बिल 9 माह का	–	5,400.00
17. अन्य जनरल डोनेशन	–	1,38,771.00	(स) बिजली बिल 9 माह का	–	9,000.00
18. अनपेड स्थापना खर्चे	–				
(अ) सेन्टर किराया (9 माह का)	–	27,000.00			
(ब) टेलीफोन बिल (9 माह का)	–	5,400.00			
(स) बिजली बिल (9 माह का)	–	9,000.00	कैश इन हैण्ड		–1,90,055.00
टोटल	–	5,66,509.00	टोटल –		5,64,509.00

नोट :- स्थापना खर्चे का भुगतान होना शेष है।
यह पत्रक सब्जेक्ट टू आडिट है।

छत्तीसगढ़ बैतुलमाल फ़ाउण्डेशन, रायपुर

◎❄◎❄◎ उपलब्धियां ◎❄◎❄◎

सन् 2005 में उपलब्धि

- **दिसम्बर 2005** – नूरानी स्कूल के 300 बच्चों का मेडिकल चेकअप कैम्प। बच्चों को रूपया 12 हजार की दवाईयाँ मुफ़्त वितरित की गई।

सन् 2006 में उपलब्धियाँ

- **जनवरी 2006** - महिलाओं का मेडिकल चेकअप कैम्प आयोजित कर 275 महिलाओं की जांच की गई और लगभग 10 हजार रुपया की दवाईयाँ मुफ़्त वितरित की गई।
- **फरवरी 2006** - मेडिकल सुविधा हेतु मारूती वेन एम्बुलेंस उपलब्ध की गई , जो निरंतर सेवारत है।
- **मार्च 2006** - हज से वापिस हुए 67 हाजियों का इस्तेक़बाल किया गया।
  - ब्लॅड बैंक की स्थापना की गई।
  - रुपया 10 हज़ार ज़कात फंड से श्रीमति रौशनआरा बेगम रायपुर को हार्ट ऑपरेशन के लिये दिया गया।
- **अप्रैल 2006** - सीबीएफ विमेन्स विंग की स्थापना की गई।
  - तीन प्याऊ घर खोले गए जो लगभग ढाई माह तक कार्यरत रहे।
- **मई 2006** - स्कूली बच्चों का समर कैम्प आयोजित किया गया। जिसमें लगभग 150 छात्र-छात्राओं को मेहंदी, आरी वर्क, कशीदा, केलीग्राफी, उर्दू , दीनियत, स्पोकन इंग्लिश, पर्सनॉलिटी डेव्हलेपमेंट के संबंध में प्रशिक्षण दिया गया।
  - समर कैम्प का समापन समारोह महिला विंग द्वारा आयोजित , जिसमें रविशंकर विश्वविद्यालय के महिला प्रोफेसरों ने भाग लेकर महिला जागृति के संबंध में प्रकाश डाला। समर कैम्प में उत्कृष्ठ पाए गए बच्चों को पुरस्कृत किया गया।
- **जून 2006** - सीबीएफ के एक सदस्य ने एक आठ साला बच्ची को उसके शादी तक तालीम और सभी दीगर खर्चो की जिम्मेदारी अपने सर ली।
  - उर्दू सिखाने की नियमित कक्षाएं खोले गए।
  - उर्दू अदबियात हैदराबाद के उर्दू दानी, उर्दू ज़बान दानी एवं इंशा की परीक्षा में 117 बच्चों ने भाग लिया।
  - अरबी सिखाने की क्लास शुरु की गई।
  - तीन ग़ैर मुस्लिमों को क़ुरआन के हिन्दी तर्जुमें भेंट किए गए।

- ज़कात एवं सदक़ा फंड से मकान बनाने के लिये रुपया 1800 बेगम सुग़रा बी, शिव नगर (संतोषी नगर) को दी गई।

जुलाई 2006 - होम्योपैथिक दवाख़ाना की स्थापना - महाराणा प्रताप मेडिकल कॉलेज के सहयोग से फ़ाउण्डेशन ऑफ़िस में स्थाई रूप से प्रारंभ किया गया। दवाख़ाना से आज दिनांक तक लगभग डेढ़ हजार मरीज़ लाभान्वित हुए।

- सीबीएफ की ओर से बैतुलमाल के संबंध में एक बुकलेट पार्ट-1 जारी की गई।

- स्कॉलरशिप फंड से उच्च शिक्षा के लिए स्कॉलरशिप घोषित की गई। जिसमें राशि लगभग रू. 36,000/- तय किया गया। इसके अंतर्गत हायर सेकेण्डरी के 5 स्कॉलरशिप (प्रति स्कॉलरशिप 1,500/- वार्षिक), 5 स्कॉलरशिप कॉलेज के लिए (प्रति स्कॉलरशिप 2,000/- वार्षिक) तथा 5 स्कॉलरशिप प्रोफ़ेशनल कोर्सेस के लिए जिसमें तकनीकी, मेडिकल आदि शामिल है (प्रति स्कॉलरशिप 3,000/- वार्षिक) प्रदान किए गए।

- स्कॉलरशिप फंड से 45 तालीमें स्कॉलरशिप (राशि लगभग रूपया 54,000/- की) कक्षा पाँचवीं से दसवीं के बच्चों को प्रति छात्र वार्षिक 1,200/- रू. प्रदान की गई। जो प्रति माह की किश्तों में बैंक के माध्यम से दी जा रही है।

- ज़कात फंड से रामकृष्ण अस्पताल में इलाज़ करा रही नुरुन्निसा वल्द मौहम्मद मुश्ताक अहमद, जगदलपुर को अतियात से 2000 रुपया मुसाफ़िर की हैसियत से दिया गया।

अगस्त 2006 - सी.बी.एफ़. का सिलाई केन्द्र कुंज-ए-आफ़ियत, सामुदायिक भवन, बैरनबाज़ार में स्थापित किया गया।

- सिलाई केन्द्र स्थापित किया गया इसमें 10 सिलाई मशीनें रखी गई। लगभग 40 महिलाएं प्रशिक्षण प्राप्त कर रही है।

- 15 अगस्त 2006 को सीबीएफ़ ब्लॅड बैंक के लिए सीबीएफ़ सदस्यों ने पांच बॉटल रक़्तदान किया।

- चिकनगूनिया की होम्योपैथिक दवाई नूरानी स्कूल के 400 बच्चों को पिलाई गई।

- ज़कात फंड से 1200 रुपया शेख शोएब हसन, संतोषी नगर के बच्चों के लिये एडमिशन फ़ीस और किताब खरीदी के लिये दिया गया।

सितम्बर 2006 - ऐलोपैथिक अस्पताल की स्थापना की गई। जो बी.मोबिनुद्दीन मेमोरियल चेरिटेबल क्लीनिक के नाम से आशियाना परिसर में चालू किया गया। ईलाज मुफ़्त, दवाईयां मुफ़्त के आधार पर अभी तक लगभग 150 मरीज़ लाभान्वित हुए।

- चश्मा फंड से 17 सितम्बर 2006 को आँखों की जॉच का कैम्प आयोजित कर लगभग 200 मरीजों के आँखों की मुफ़्त जाँच और 118 चश्में मरीजों के आवश्यकतानुसार मुफ़्त प्रदान किए गए। (प्रति चश्मा 150 - 300 रूपए का व्यय सीबीएफ़ ने वहन किये)

- अतियात फंड से रुपया 600 के श्रीमति जाहिदा बेगम के 3 स्कूली बच्चों के लिये स्कूल ड्रेस खरीदकर दिये गये।

अक्टूबर 2006 - सी.बी.एफ. के सदस्यों ने और 6 सिलाई मशीनें 6 माह के लिये सिलाई केन्द्र को लोन दी।

- रमज़ान के दौरान सी.बी.एफ. द्वारा तैयार की गई ज़कात, फ़ितरा व अतियात की तीन बुकलेट पार्ट-1, 2 एवं 3 को शहर के साहेबेनिसाब लोगों को पोस्ट से भेजी गई।

- सी.बी.एफ. की महिला सदस्यों द्वारा लगभग 60 पुराने कपड़े संजय नगर मदरसे में तक़सीम किये गये।

- सदक़ए फ़ित्र फंड से 28 रमज़ान को 240 फ़ितरे के पैकेट तैयार कर ग़रीब मुस्लिम बस्तियों में फ़ुक़रा, मसाक़ीन व ग़रीबों में तक़सीम किये गये।

- सी.बी.एफ. सदस्यों के डोनेशन से 29 अक्टूबर को ईद एवं दिवाली मिलन समारोह आयोजित कर लोगों को सी.बी.एफ़. के कार्यों से अवगत कराया गया और स्थानीय स्तर का मुशायरा आयोजित किया गया।

- स्कॉलरशिप फंड से एक कॉलेज स्कॉलरशिप कुमारी सादाब को बी.एस.सी. II के लिये जारी किये गये।

नवम्बर 2006 - ज़कात फंड से रुपये 11,130.00 के कंबल गुरबा व मसाक़ीन में तक़सीम करने के लिये खरीदे गये।

- स्कॉलरशिप फंड से 3 हायर सेकेण्डरी स्कॉलरशिप श्री नईम अख़्तर ख़ान 11वीं, श्री मोहम्मद वसीम 11वीं और जीनत परवीन 11वीं को जारी की गई।

- अतियात फंड से 1 मुसाफ़िर मरीज़ को उसकी ज़रूरत के लिये 2 हज़ार रुपया डोनेशन हासिल कर अदा किया गया ताकि उसके ज़रूरी एख़राजात पूरे हो सकें।

दिसम्बर 2006 - चश्मा फंड से 10 दिसम्बर को दूसरा आँखों का कैम्प आयोजित किया गया जिसमें 213 मरीज़ों की आँखों की जाँच की गई। 80 चश्में मुफ़्त बांटे गये।

- सी.बी.एफ. का कहकशाँ मदरसा कांशीराम नगर के तुलबा को ज़कात फंड से रुपया 294 की कापियाँ खरीदकर दी गईं।

- सी.बी.एफ. के एक सदस्य द्वारा श्रीमति नूरजहाँ बेगम, बैजनाथपारा को उनके लड़के की बीमारी में दवाईयाँ उपलब्ध की गईं।

- अतियात फंड से छत्तीसगढ़ बैतुलमाल फाउण्डेशन के तरफ से 1 हज़ार कैलेन्डर और 1 हज़ार पॉकेट कैलेन्डर छपाकर आम मालूमात के लिये जारी किये गये।

- ज़कात फंड से कुमारी शीरीन जो मेन्टली रिटॉर्डेड लड़की है, जो कांशीराम नगर में रहती है का 2000 रुपया जमा कराकर अपंग स्कूल में एडमिशन कराया गया।

- स्कॉलरशिप फंड से एक प्रोफेशनल स्कॉलरशिप श्री मिसबाहुल अज़ीज ख़ान को एन.आई.टी. II वर्ष के लिये जारी गई।
- ज़कात फंड से कांशीराम नगर की परवीन बेगम को जो साग़-सब्जी बेचती है, 3 हज़ार 5 सौ रुपये का एक चारपहिया ठेला खरीदकर दिया गया।
- सी.बी.एफ. के महिला सदस्यों द्वारा पुराने कपड़े ग़ुरबा में तक़सीम करने के लिये जमा कराये गये।
- ज़कात फंड से मौहम्मद रफ़ीक क़ुरैशी, टिकरापारा को स्कूल की फ़ीस और किताब खरीदकर दिया गया।
- ज़कात फंड से रुपया 14,780.00 के साड़ी और सलवार शूट गरीबों में बांटने के लिये खरीदे गये।

सन् 2007 में उपलब्धियाँ

जनवरी 2007 - ज़कात फंड से 11,130.00 रुपये के क्रय किये गये। 240 कंबलों का वितरण ग़रीब ग़ुरबा व मसाक़ीन में ज़कात फंड से बांटे गये।
- ईदुलअज़हा के दिन मेम्बरों के यहाँ की क़ुर्बानी से हासिल गोश्त के करीब 200 पैकेट तैयार कर गरीबों बस्तियों में बाँटे गये।
- आँखों के 3 ऑपरेशन चश्मा फंड से कराये गये।
- जनाब अब्दुल रज़्ज़ाक़ साहब, संजय नगर द्वारा अपने घर की मशीन सिलाई सेंटर के लिये अतिये के तौर पर दी गई।
- सी.बी.एफ. फंड से सिलाई सेंटर के लिये पाँच नई मशीनें क्रय की गई ताकि सेंटर में सिलाई सीखने वाले लोगों को रोज़गार दिया जा सके।
- कांशीराम नगर में सी.बी.एफ. के तरफ से एक छत्तीसगढ़ मदरसा बोर्ड का कहकशाँ मदरसा स्कूल खोला गया जिसमें 20 बच्चे पहली व दूसरी क्लास में और लगभग 19 महिलाएँ अरबी और उर्दू सीख रही हैं।
- कांशीराम नगर में सी.बी.एफ. की तरफ से एक सिलाई सेंटर 2 मशीनों को चालू किया गया जिसमें लगभग 12 लड़कियाँ सिलाई सीख रही हैं।
- नूरानी स्कूल, पंडरी के 53 बच्चों के स्कूली फ़ीस के लिये ज़कात फंड से 16 हज़ार 5 सौ रुपया उनके बैंक खाते खुलवाकर अदा किया गया।
- ज़कात फंड से बेवा इरशाद बी, कांशीराम नगर का मकान रिपेयर का कर्ज़ा रुपया 3200 दिया गया।
- बीरगाँव के राजस्थानी बस्ती में एक मदरसा शुरू किया गया।
- ज़कात फंड से बेगम सरफून्निसा सर्वोदय नगर की बच्ची के लिये एडमिशन फ़ीस और

किताब खरीदकर दी गई।

- ज़कात फंड से शेख़ अब्दुल क़ुरैशी बैरन बाज़ार को 3700 रुपये से एक सायकल रिक्शा खरीदकर दिया गया।

- सी.बी.एफ. की विमेन्स विंग ने कांशीराम नगर में क़ुरआनख़ानी का एहतेमाम किया और मोहल्ले की ख़्वातिन के साथ तबादले ख़्याल किया।

- सी.बी.एफ. और महाराणा प्रताप होम्योपैथिक कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में आशियाना में चिकन पाक्स महाशिविर का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 150 मरीजों को चिकनपाक्स के ड्राप्स पिलाये गये।

- ज़कात फंड से रुपया 2000 राजातालाब के जनाब नवाब ख़ान को मकान रिपेयर के लिये इमदाद की गई।

- ज़कात फंड से रुपया 2000 राजातालाब की श्रीमति मुमताज बेगम को उसकी बच्ची अनस के ऑपरेशन के लिये बतौर इमदाद दी गई।

फरवरी 2007 - ज़कात फंड से 1200 रुपये फ़ातेशा मार्केट के जनाब ज़हीर अहमद को बतौर इमदाद के उनकी बच्ची के इलाज़ के लिये दिया गया।

- ज़कात फंड से रुपया 300 की किताबें संतोषी नगर के जनाब हुसैन ख़ाँ को खरीदकर दी गईं।

- ज़कात फंड से रुपया 300 की किताबें कुमारी शबनम ख़ाँ को खरीदकर दी गईं।

- ज़कात फंड से रुपया 900 की बी.ए. प्रथम वर्ष की किताबें मोहम्मद रफ़ीक़ क़ुरैशी को खरीदकर दी गईं।

मार्च 2007 - ज़कात फंड से रुपया 2500 संतोषी नगर की अमीना बी को उसकी बच्ची कुमारी सबीहा के इलाज़ में मदद के लिये दिया गया।

- ज़कात फंड से रुपया 2000 कुमारी जीनत फ़ातेमा की स्कूल की सालाना फ़ीस मॉडल हाईस्कूल में जमा कराई गई।

इस्लाम के बुनियादी व अमली अरकान का ताल्लुक़ बयकवक़्त ख़ुदा से, उसकी मख़लूक़ और ख़ुद इंसान के अपने एख़लाक़ व जज्बात से भी है। हरचंद कि ज़कात, ख़ैरात, सदक़ा या दान का वजूद हमें दुनिया के तमाम मज़ाहेब में किसी न किसी सूरत में मिलता है लेकिन ये इस्लाम ही है जिसने उसे पहली मर्तबा दीन का एक बुनियादी रुकून, मुसलमान पर एक फर्ज़ और एक अज़ीमुश्शान सौग़ात करार दिया और उसकी पहली मर्तबा मुनज़्ज़िम (संगठित) मुनज़ेबत (शरियत के ज़ाबेते में) मोअय्यन (निर्धारित कर) और एक मुकम्मिल इदारे (इंस्टीट्यूशन) का दर्जा दिया।

– हाफ़िज़ अब्दुल रहमान

दुआ

लब पे आती है दुआ बन के तमन्ना मेरी।
ज़िन्दगी शमा की सूरत हो ख़ुदाया मेरी॥
दूर, दुनिया का मेरे दम से अंधेरा हो जाए
हर जगह मेरे चमकने से ऊजाला हो जाए॥
हो मेरे दम से यूं ही मेरे वतन की ज़ीनत।
जिस तरह फूल से होती है चमन की ज़ीनत॥
ज़िन्दगी हो मेरे परवाने की सूरत या रब।
ईल्म की शमा से हो मुझ को मुहब्बत या रब॥
हो मेरा काम ग़रीबों की हिमायत करना।
दर्द मंदों से ज़ईफ़ों से मुहब्बत करना॥
मेरे अल्लाह ! बुराई से बचाना मुझ को।
नेक जो राह है उस रह पे चलाना मुझ को॥

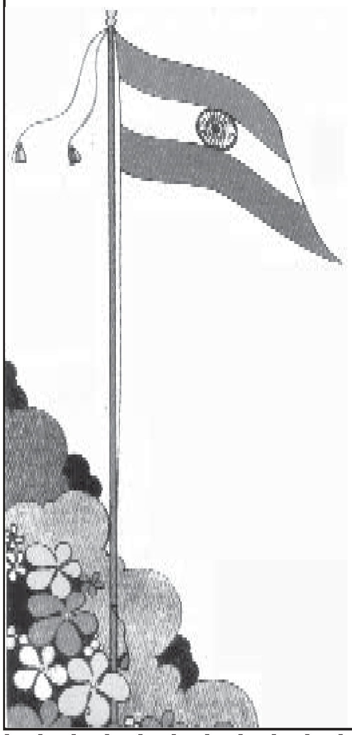

सारे जहां से अच्छा

सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा।
हम बुलबुले हैं उसकी ये गुलस्तिां हमारा॥
गुरबत में हों अगर हम रहता है दिल वतन में।
समझो वहीं हमें भी, दिल हो जहां हमारा॥
परबत वह सब से ऊंचा हमसाया आसमां का।
वह संतरी हमारा, वह पासबां हमारा॥
गोदी में खेलती है इसकी हज़ारों नदियां।
गुलशन है जिन के दम से रश्के जहां हमारा॥
सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा।
हम बुलबुले हैं उसकी ये गुलस्तिां हमारा॥

a a a

दुआ

या रब दिले मुस्लिम को वह ज़िन्दा तमन्ना दे।
जो क़ल्ब को गरमा दे, जो रूह को तड़पा दे ।।
फ़िर वादिये फ़ाराँ के हर ज़र्रे को चमका दे।
फ़िर शौक़े तमाशा दे, फ़िर ज़ौक़े तक़ाज़ा दे ।।
महरूमे तमाशा को फ़िर दीदए बीना दे।
देखा है जो कुछ मैंने औरों को भी दिखला दे ।।
भटके हुए आहू को फ़िर सूए हरम ले चल।
इस शहर के ख़ूगर को फ़िर वसअते सेहरा दे ।।
पैदा दिले वीरां में फ़िर शोरिशे महशर कर।
इस मोहमिले ख़ाली को, फ़िर शाहिदे लैला दे ।।
इस दौर की ज़ुल्मत में, हर क़ल्ब परेशां को।
वह दाग़े मोहब्बत दे, जो चांद को शरमा दें ।।
रफ़अत में मक़ासिद को हमदोशे सुरैया दे।
ख़ुद्दारीए साहिल दे, आचादिए दरिया दे ।।
बेलोस मोहब्बत हो बे बाक़ सदाक़त हो।
सीनों में उजाला कर, दिल सूरते मीना दे ।।
अहसासे इनायत कर आसारे मुसीबत का।
इमरोज़ की शोरिश में अन्देश-ए फ़र्दा दे ।।

मैं बुलबुले नालां हूं एक उजड़े गुलिस्तां का।
तासिर का सायल हूं मोहताज को दाता दे ।।

मिल्लते इस्लामिया हिन्द जिस तरह इस वक़्त गुरबत व अफ़लास से दो–चार है उसके लिए एक मुनज़्ज़िम व मंसूबाबंद जद्दोजहद की शदीद ज़रूरत है। क़ौमे मुस्लिम की ये ख़ुशनसीबी है कि इस्लाम ने उसे ज़कात जैसा बेनज़ीर मआशी नुस्ख़ए कीमिया अता किया है। मौलाना अबूल क़लाम आज़ाद ने अपनी तसनीफ़ ''हक़ीक़ते ज़कात'' में बैतुलमाल के क़याम पर ज़ोर दिया है कि ये एक समाजी फ़र्ज़ है जिस तरह फ़र्ज़ नमाज़ की अदायगी के लिये ज़मात मुस्तहीब है उसी तरह नज़्में ज़कात और उसकी मुन्सेफ़ाना तक़सीम के लिये बैतुल माल ज़ख़ीरएदुनिया व आख़िरत क़रार पाता है। ये हम तमाम मुसलमानों की ज़िम्मेदारी है कि इबादत का मसला हो या दीगर मामलात का, इज़्तेमाईयत की बरकात बेशुमार है। यही इस्लाम की बुनियादी तालीम भी है। ज़रूरत इस बात की है कि इज़्तेमाई नज़्में ज़कात क़ायम हो और मौसमी मेंढ़कों की तरह आवाज़ लगाकर कोई देने वाला और कोई लेने वाला हाथ शर्मिंदा न हो। इस क़ारे ख़ैर को सालभर जारी रहना चाहिए कि देने वाला शाकिर और मांगने वाला आसूदा हो जाए।

- डॉ. अख़्तरुल वासे

हम और हमारे वालदैन

हम पर हमारे वालदैन के इतने ज़्यादा एहसान हैं कि अगर हम अपनी पूरी ज़िन्दगी भी उनकी ख़िदमत करने में सर्फ़ कर दें तो हक अदा नहीं कर सकते। जरा सोंचे तो हमारे माँ–बाप कितने प्यार और मेहनत से हमारी परवरिश करते हैं। ख़ुद तो हर तरह की तकलीफ़ और तंगी झेल लेते हैं और हमारी तरबीयत और हमारे आराम व सुकून के लिये अपनी हिम्मत से भी बढ़कर कोशिशें करते हैं। सच्ची बात ये है कि वालदैन का पूरा हक अदा किया ही नहीं जा सकता।

माँ–बाप हमेशा अपनी औलाद को खुश व खुर्रम और कामयाब देखना चाहते हैं। दुनिया में हुस्ने सुलूक के सबसे ज़्यादा हकदार हमारे वालदैन ही तो हैं।

अल्लाह तआला का इरशाद है 'तुम्हारे रब का हुक्म है कि तुम उसके सिवा किसी की इबादत न करो और माँ–बाप के साथ अच्छे सलूक से पेश आओ। अगर उनमें से एक या दोनों तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुंच जायें तो उन्हें उफ़ तक न कहना और न उन्हें झिड़कना और उनसे नेहायत नरमी और अदब से बात करना और आजिज़ी और नरमी के साथ उनके सामने झुक कर रहना और दुआ करते रहना कि – ऐ मेरे रब ! उन पर रहम फ़रमा जिस तरह उन्होंने बचपन में मुझे (प्यार और मेहनत के साथ) पाला।'

माख़ूज़– अलहिलाल से

अल्लाह के रसूल[सल्ल.] ने फ़रमाया– 'जन्नत माँ के कदमों के नीचे है'– और यह भी फ़रमाँ है उसकी नाकख़ाकआलूद हो जिसने अपने वालदैन में से किसी एक या दोनों को बुढ़ापे की तरफ बढ़ते देखा और उनकी ख़िदमत करके जन्नत में दाख़िल न हुआ।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूदरज़ि. बयान करते हैं कि मैंने रसूल[सल्ल.] से अर्ज किया – बेहतरीन अमल कौन सा है जो अल्लाह तआला को सबसे ज़्यादा पसंद हो। सरकारेदोआलम[सल्ल.] ने इरशाद फ़रमाया– वक़्त पर नमाज़ पढ़ना। मैंने अर्ज़ किया– इसके बाद ? आपने इरशाद फ़रमाया– माँ–बाप से अच्छा बर्ताव करना। मैंने अर्ज़ किया– कौन सा अमल ? आपने इरशाद फ़रमाया– अल्लाह के रास्ते में जेहाद करना (बुख़ारी व मुस्लिम)

9 9 9

बैतुलमाल क्या है ?

आधुनिक अर्थों में बैतुलमाल को यदि समझना है तो यह कहा जा सकता है कि बैतुलमाल मुसलमानों कि कोआपरेटिव सोसायटी है, ये उनकी इंश्युरेंस कंपनी है ये उनका प्राविडेंट फंड है ये उनके लिए बेक़ारों को सरमायाएअआनत (मदद की पूंजी) है, ये उनके माज़ूरों, अपाहिजों, बीमारों, यतीमों और बेवाओं को ज़रियए माश (रोज़ी) दिलाने का साधन हैं और इन सबसे बड़कर ये वह चीज़ है जो मुसलमानों को फ़िक्रे फ़र्दा (आख़ेरत की चिंता) से बेनियाज़ (बेफ़िक्र) कर देती है इसका सीधा – साधा उसूल ये है कि आज तुम मालदार हो तो दूसरों की मदद करो कल तुम नादार हो गए तो दूसरे तुम्हारी मदद करेंगे। तुम्हें ये फ़िक्र करने की ज़रूरत नहीं कि मुफ़लीस हो गए थे तो क्या बनेगा ? मर गए तो बीवी बच्चों का क्या हश्र (नियति) होगा ? कोई आफ़ते नागहानि (अचानक आने वाली मुसिबत) आप पड़ी, बीमार हो गए, घर में आग लग गई, सैलाब आ गया, दिवाला निकल गया तो इन मुसिबतों से बचने का तरीका क्या होगा ? सफ़र में पैसा पास न हो तो किसतरह गुजारा होगा। इन सब फ़िक्रों से सिर्फ़ बैतुलमाल या उसमें दी गई अतियात, डोनेशन, दान, सदका, फितरा, ज़कात तुमको हमेशा के लिए बेफ़िक्र कर देती है। तुम्हारा काम बस इतना है कि अपनी बची दौलत में से अतियात, डोनेशन, दान दें और ढाई प्रतिशत ज़कात देकर अल्लाह की इंश्यूरेंस कंपनी में अपना बीमा करा लो उस वक़्त तुमको इस दौलत की ज़रूरत नहीं ये उनके काम आएगी जो इसके ज़रूरतमंद है कल जब तुम ज़रूरतमंद होंगे या तुम्हारी औलाद ज़रूरतमंद होगी तो न सिर्फ़ तुम्हारा अपना दिया हुआ माल बल्कि इससे भी ज़्यादा तुमको वापस मिल जाएगा।

कुरआन की अज़मत अहादीस की रौशनी में

ब–रिवायत अबुमूसा अशअरी[रजि.] से रसूलुल्लाह[सल्ल.] ने फ़रमाया 'कुरआन पढ़ने वाले मोमिन की मिसाल तरंज (मीठे नीबू) की तरह है। इसकी महक भी अच्छी और इसका फल भी अच्छा है और उस मोमिन की मिसाल जो कुरआन नहीं पढ़ता खजूर की तरह है जो उसमें महक नहीं होती लेकिन उसका मज़ा शीरीन है और उस मुनाफ़िक़ की मिसाल जो कुरआन पढ़ता है और रेहान (नाज़बू) की तरह है कि उसकी महक तो अच्छी मगर उसका मज़ा कड़वा होता है मगर उस मुनाफ़िक़ की मिसाल जो कुरआन नहीं पढ़ता है हन्ज़ल (एक कड़वा फल) की सी जिसमें कोई बू नहीं होती और मज़ा भी कड़वा होता है। *(बुख़ारी, मुस्लिम, इब्नेमाजा)*

यानि जो मोमिन कुरआन पढ़ता है वह ज़ाहिर व बातिन हर तरह की ख़ूबियो से आरास्ता होता है जो मोमिन कुरआन नहीं पढ़ता उसके ज़ाहिर में एक बड़ी कमी व नुक़्स है लेकिन बातिन को बेरौनक नहीं कहा जा सकता। इसलिए क्योंकि ईमान उसके अंदर मौजूद है। मुनाफ़िक़ के पास ज़ाहिर होता है बातिन नहीं वह पढ़ने को तो कुरआन पढ़ता हुआ होता है मगर उसके दिल में निफ़ाक़ का रोग लगा हुआ है, जो मुनाफ़िक़ कुरआन नहीं पढ़ता उसका नज़ाहिर अच्छा और न बातिनी ख़ूबियां ही अच्छी है।

ब–रिवायत अब्दुल्लाह बिन मसऊद[रजि.] रसूलुल्लाह[सल्ल.] ने फ़रमाया, ये कुरआन ख़ुदाई दस्तरख़ान है तो तुम उसके दस्तख़ान की तरफ़ बढ़ो जहां तक तुमसे हो सके। ये कुरआन अल्लाह की रस्सी है और नूरे मुबीन और नफ़ा बख़्श शिफ़ा है इसके लिए बचाव और मोहाफ़िज़त का सामान है। जो इसे मज़बूती से पकड़े उसके लिए निजात है। जो इसकी पैरवी एख़्तियार करे न वह राह से हटेगा कि इसकी फ़हाईश की ज़रूरत पड़े और न टेढ़ा होगा कि सीधा करने की ज़रूरत पेश आए और इसके अजायब कम होने के नहीं और न वह कसरते तिलावत से पूरा न होता है।अल्लाह तुम्हे इसकी तिलावत पर हर हुर्फ़ के बदले दस नेकियां अता करेगा मैं ये नहीं कहता कि अलीफ़, लाम, मीम, एक हुर्फ़ है बल्कि 'अलीफ़'एक हुर्फ़ है और 'लाम'एक हुर्फ़ है और 'मीम' एक हुर्फ़ है। *(हाकिम)*

बुनियादी अरक़ान इस्लाम में एक अहम रूकून ज़कात है जो इबादत होने के साथ–साथ इस्लाम के इक़्तेसादी और समाजी निज़ाम का एक अहम जुज़ है। इस्लाम ने ज़कात का निज़ाम क़ायम करके अनफ़ाक़ फ़ीसबीलिल्लाह की तरग़ीब के ज़रिये इमदादे बाहमी का एक वसी नज़्म क़ायम किया है। साथ ही इसमें ज़कात देने वाले का तज़कीये नफ़स भी है, यानि ज़कात देने से माल की मोहब्बत दिल से दूर होती है। अल्लाह तआला ने अपने क़लाम पाक में जगह–जगह फ़रमाया की नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो और चूंकि ज़कात हर मुस्लिम साहेबे निसाब पर फ़र्ज किया गया है। अल्लाह तआला हम सब मुसलमानों को इज़तेमाई नज़्म क़ायम करने की तौफ़ीक़ दे। (आमीन)

-डॉ. राबे हुस्नी नदवी, सदर, ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड

सर सैय्यद की वज़ह से मुसलमानों की तरक़्क़ी का आग़ाज़ हुआ

जुनूबी एशिया में मुसलमानों के नए दौर का आग़ाज़ सर सैय्यद अहमद ख़ान से होता है । उनका नाम सैय्यद अहमद था, ख़ान बहादुर उनका ख़िताब था। वह 17 अक्टूबर 1817 ईस्वी में पैदा हुए और 27 मार्च 1898 में उनका इंतेक़ाल हुआ ।

दरअसल अंग्रेज़ो ने मुसलमानों से हुकूमत छिनी थी और वह मुसलमानों ही से ख़तरा महसूस करता था और मुसलमान भी अंग्रेज़ से नफ़रत करते थे जिसकी वजह से वह अंग्रेज़ी तालीम और जदीद दौर के उलूम से बेबहरा और लाताल्लुक़ रहते थे। दूसरी जानिब हिन्दु , अंग्रेज़ी तालीम और जदीद उलूम तेज़ी के साथ हासिल कर रहे थे।

सर सैय्यद अहमद ख़ां ने इस सूरतेहाल को भांपकर मुसलमानों को जदीद तालीम की तरफ़ राग़िब किया । उन्होने मोहम्मडन एंग्लो ओरिएंट कॉलेज बनाया, जो बाद में अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी बन गया । उनकी मेहनत और दानिशमंदी की वजह से मुसलमानों में तालीमेयाफ़्ता, दानिशमंद अफ़राद पैदा हुए। सियासतदानों की नई नसल ने जन्म लिया और अलीगढ़ ने एक तहरीक की शकल इख़्तियार की। यूं हिन्दुस्तान में मुसलमानों के सियासी मुस्तक़बिल को महफ़ूज़ बनाने की बुनियाद पड़ी। सर सैय्यद अहमद ख़ां मुग़ल घराने में पैदा हुए। उन्होंने बरतानवी हुकूमत में जज की हैसियत से काम किया और उनके इल्म की चर्चा होने लगी। वह ख़ुद 1857 की जंगे आज़ादी से ज़ाती तौर पर मुताअस्सिर हुए थे। उन्होंने इस मौज़ू पर एक किताबचा 'अस्बाबे बग़ावते हिन्द ' तहरीर किया था । उस दौर में ये एक बड़ा जूरअतमंदाना काम था क्योंकि उन्होंने इसमें बर्तानवी पालीसियों पर सख़्त नुक्ताचीनी की थी और ये बताया था कि उनकी वजह से ये बग़ावत हुई। उनका ये यक़ीन था कि मुसलमान जब तक जदीद तालीम हासिल नहीं करेंगे, उनका मुस्तक़बिल ख़राब रहेगा। चूनांचे उन्होंने मग़रीबी तर्ज़ की साइंसी तालीम पर ज़ोर देना शुरू किया। उन्होने जदीद स्कूल क़ायम किए और सोचने समझने वाले पढ़ने लिखने वाले मुसलमानों को मुनज़्ज़िम किया। बर्तानवी कॉलेज़ों की तर्ज़ पर उन्होने 1875 ईस्वी में मोहम्मडन एंग्लो ओरिएंट कॉलेज क़ायम किया ताकि हिन्दुस्तानी मुसलमानों की समाजी व एक़्तेसादी तरक़्क़ी को फ़रोग़ दिया जा सके।

सर सैय्यद अपने दौर के बेहद बाअसर मुसलमान सियासतदान थे। वह बड़े मुफ़क्क़िर थे वह इंडिया नेशनल कांग्रेस जैसी क़ौम परस्त जमातों के मुख़ालिफ़ थे । इसके बरअक्स उन्होंने मुसलमानों के लिए उर्दू को राब्ते की ज़बान क़रार दिया। मुसलमान उनसे बेहद मुतासिर हुए और इन्ही की वजह से जदीद तालीम और साइंसी उलूम की तरफ़ राग़िब हुए। सर सैय्यद ख़ां ने मुसलमानों में समाजी इस्लाहात के लिए भी काम किया।

तालीम में ग़फ़लत के नताइज

बच्चों की सही तालीम व तरबियत एक अहम दीनी फ़रीज़ा है और हमें इसकी अदायगी की पूरी फ़िक्र होनी चाहिए। वर्ना सख्त गिरफ़्त का अंदेशा है।ये ज़िम्मेदारी वालिदैन और असातेज़ा पर आयाद होती है। इसलिए उन्हें ज़्यादा फ़िक्र मंद होना चाहिए। ख़ुसूसन आज के हालात में तो इस तरह ख़ास तवज्जोह देने की ज़रूरत क्योंकि मामूली सी ग़फ़लत निहायत ख़तरनाक़ नताईज से दोचार कर सकती है। तालीम व तरबियत की तरफ़ से ग़फ़लत न सिर्फ़ अफ़राद और कुनबों बल्कि मुल्क व मिल्लत सबके हक़ में इन्तेहाइ ख़रतनाक़ साबित हो सकती है। आईए हम जाने कि तालीम में ग़फ़लत के क्या नताइज हो सकते है :

(1) बच्चे नाकारा और निकम्मे रह जाते है उनकी पैदाइशी कुव्वतें और सलाहियतें या तो रूक जाती है या गलत रूख़ इख़्तियार कर लेती है।
(2) तरह-तरह की बुराईयों और बदआमालियों में मुबतेला होकर बच्चे दीन व दुनिया दोनों तबाह कर लेते।
(3) बाप-दादा की गाढ़ी कमाई निहायत बेदर्दी से उड़ा देते है।
(4 ख़ानदान के चश्म व चिराग़ होने के बजाए उसका नाम डुबोते है।
(5) अपने ख़राब वसवसे से दीन व मिल्लत को बदनाम करते है।
(6) जराईम पेशा होकर सब के लिए दर्देसर बनते है और मुल्क व मआशरे को तरह - तरह से नुक़सान पहुंचाते है।

<u>इसके बरअक्स बच्चों की तालीम व तरबियत पर अगर मुनासिब तवज्जोह दी जाती है तो</u>

(1) उनकी सलाहियतें उभरती और संवरती है और दीन व दुनिया में उन्हें फ़लाह कामरानी नसीब होती है।
(2) इस मक़सद की तकमील में मदद मिलती है जिसके लिए अल्लाह ने उन्हें ज़मीन पर भेजा है।
(3) वह अल्लाह के स्वालेह बंदे मआशरे के बेलोस ख़ादिम और मुल्क के वफ़ादार शहरी बनते है।
(4) वह अपने इनफ़ेरादी, ख़ानदानी और इजतेमाइ ज़िम्मेदारियों को निभाने के अहल हो जाते है।
(5) उनका वजूद ख़ुद अपने लिए अपने मुल्क व मिल्लत सबके लिए बाईसे रहमत और मुजिब ख़ैर व बरकत होता है।
(6) तमद्दुन की तरक़्क़ी और उनकी सलाहियतों से मदद मिलती है।

ग़रज सही तालीम व तरबियत पर सर्फ़ की हुई कुव्वत, मेहनत व दौलत हर एक के हक़ में नफ़ा बख़्श साबित होती है। मगर अफ़सोस ये है कि हमारी ग़फ़लतों और कल्चरी प्रोग्राम वग़ैरह के ज़रिए वह ख़ुदा से बेनियाज़ी, आख़िरत की बाज़पुर्स से बेख़ौफ़, सर्फ़ व तौहम परसती, तआस्सुब व तंग नज़री ख़ुदग़र्ज़ी व ख़ुदनुमाइ, अय्याशी में मुबतेला हो जाते है। इसलिए हमारे लिए ये बेहद ज़रूरी है कि हम ख़ुद तालीम की अहमियत को समझे और अपने बच्चो के लिए सही तालीम व तरबियत का इंतेज़ाम करें।

(असमा क़ुरैशी)

- - -

क़ुरआन की अहमियत

अल्लाह ने अपने बंदों की हिदायत के लिए अपने रसूलों पर किताबें नाज़िल कीं। ख़ुदा की आख़िरी किताब क़ुरआन मजीद जो आख़री रसूल हजरत मोहम्मद[सल्ल.] पर नाज़िल हुआ है। क़ुरआन अपने अल्फ़ाज़ और माइनी दोनों पहलूओं से ख़ुदा का कलाम है। ये किताब रसूले मोहम्मद[सल्ल.] की अपनी तसनीफ़ नहीं है। रसूल का काम तो ये है कि वह एक अमानतदार की तरह इस किताब को जो ख़ुदा की तरफ़ से उस पर नाज़िल हुई है, ख़ुदा के बंदों तक पहुंचाए और अपनी तरफ़ से इसमें कोई कमीबेशी न करें बल्कि अल्लाह की बख़्शी हुई बसीरत (राय) और फ़हम से इस किताब के माइनी मतलब बयान करें और अपनी पाकीज़ा तालीम व सीरत के ज़रिए लोगों के अफ़कार व ख़यालात दुरूस्त करें उनके एख़लाक़ की इस्लाह करे उनकी ज़िन्दगियों में इंक़लाब पैदा करें और उन्हें एक बेहतरीन गिरोह और उम्मत बनाए ऐसा गिरोह जिसके सबब दुनिया में भलाई फ़ैले और बुराई का ख़ात्मा हो।

तौरात, इंज़ील, ज़बूर वग़ैरह अल्लाह की तरफ़ से बहुत सी किताबें उतरी लेकिन इनमें कितनी किताबें है जो बिलकुल ही ग़ायब हो गई और जो किताब आज पाई जाती है उनमें क़ुरआन के सिवा कोई किताब अपने असली अल्फ़ाज़ और माइनी के साथ महफ़ूज़ नहीं, क्योंकि दिगर किताबों में कलामें इलाही के साथ इंसानी कलाम भी शामिल हो गया। लोगों ने इनमें बहुत सी बातें अपनी तरफ़ से मिला दी और कितनी ही बातों को बदल कर रख दिया। अब ये तमीज़ करना बहुत ही दुश्वार है कि उनमें कितना हक़ और कितना बातिल है लेकिन क़ुरआन की ज़बान को आज भी दुनिया में एक ज़िंदा ज़बान की हैसियत हासिल है और इस ज़बान को मानने बोलने और समझने वाले करोड़ों की तादाद में दुनिया में मौजूद है।

ये किताब आसमानी हिदायत का आख़री और जदीद एडीशन है। जिसमें क़यामत तक के लिए और दुनिया के सारे इंसानों के लिए हिदायत का सामान मौजूद है और इस किताब के बाद किसी और किताब की ज़रूरत बाक़ी नहीं रहती क्योंकि हिदायत पाने और अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए वह सभी बातें बयान कर दी गई है। इसमें वह तमाम ख़ुबियां जो पिछली किताबों और सहीफ़ों में अलग-अलग थीं। जो हमारी सही रहनुमाइ और अमली ज़िन्दगी के लिए मुकम्मल ज़ाब्ता ज़िन्दगी और वाजिबुलइत्तेबा क़ानून की हैसियत हासिल है जिसने इस किताब को नज़र अंदाज़ कर दिया उसने अपना

रिश्ता सरचश्मए हयात से तोड़ लिया उसके दिल में निफ़ाक़ का रोग लगा हुआ है जो मुनाफ़िक़ कुरआन नहीं पढ़ता उसका न ज़ाहिर अच्छा है और न बातीनी ख़ूबियां ही अच्छी है।

रसूलुल्लाह[सल्ल.] ने फ़रमाया जिसने कुरआन पढ़ा उसने नबूवत को आग़ोश में ले लिया फ़र्क़ ये है कि उसकी तरफ़ वह्यी नहीं की जाती। साहबे कुरआन के शायानेशान ये बात नहीं है कि वह ग़ुस्सा करने वाले के साथ ख़ुद ग़ुस्सा करने लगे या झगड़ने वाले के साथ झगड़े, जबकि उसके सीने में ख़ुदा का कलाम मौजूद है।

कुरआन इंसान को जिस दीन की तरफ़ दावत देता है वही इंसान का हक़ीक़ी और फ़ितरी मजहब है इसी वजह से उसने लोगों को उनकी अक़्ल व बसिरत की राह से दावत दी और उनकी फ़ितरत से अपील की है और फ़ितरते इंसानी के अंदर मौजूद हक़ायक़ से लोगों को बाख़बर किया और उसके फ़ितरी तक़ाज़े याद दिलाए है इसी बिना पर कुरआन ऐसी बुनियाद क़ायम करता है कि इसमें किसी शकूक और शुबहात क़ायम नहीं हो सकते जो हमारे लिए हक़, मेहरबान और नूर है।

कुरआन और वह्यी–ए–इलाही के ज़रिए इंसान को हक़ीक़ी हयात हासिल होती है जो हमारी अबदी ज़िन्दगी का ज़रिया है जो हमारा सीधा रास्ता है वही–ए–इलाही वह पाकीज़ा रिज़्क़ है जिससे हमारी रूहानी हयात वाबस्ता

चूनांचे हज़रत मूसा[अलै.] के सहीफ़ा में है, 'इंसान सिर्फ़ रोटी से नहीं' बल्कि उस कलमें से जीता है जो ख़ुदावंदा की तरफ़ से आता है। (मतीः 4:14)

कुरआन में भी अल्लाह तआला फ़रमाता है : वह्यी वहदानियते ख़ुदावंदी की हैसियत रिज़्क़ हसन की है।

(मेराजुल हक़ अंसारी)

u u u

ज़कात देते वक़्त या ज़कात के लिये माल अलग करते वक़्त ज़कात की नीयत का होना ज़रुरी है नीयत के यह मानी हैं कि अगर पूछा जाये तो बिला तअम्मुल बता सके कि ज़कात है। – क़ानूने शरीयत हज़रत मौलाना शमशुद्दीन अहमद ज़ाफ़री, रिज़वी

इज्तेमाई नज़्में ज़कात की ज़रूरत

इस हक़ीक़त से इंकार मुमकिन नहीं कि साहबे हैसियत मुसलमानों की अक्सरियत उन लोगों पर मुश्तमिल है जिनके दिलों में ख़ौफ़ेख़ुदा है और जो इस्लाम के बुनियादी अरकान की अंजामदेही में तसाहिल से काम नहीं लेते। यही वजह है कि ज़कात, फितरा, सदक़ा, ख़ैरात, अतियात, दान, डोनेशन की अदायगी में भी साहबेहैसियत मुसलमान पेश-पेश रहते हैं जिसका सबूत वह करोड़ों रूपये की रक़म है जो हर साल ग़रीबों, यतीमों और नादारों में तक़्सीम होती है। ये न होता तो किसी सरकारी इमदाद के बग़ैर चलने वाले सैकड़ों यतीमख़ाने दम तोड़ चुके होते और मआशरे में बेवा ख़्वातीन नीज़ यतीम व नादार अफ़राद का पुरसानेहाल भी कोई न होता। चूंकि हर साहबेहैसियत अदायगिए ज़कात के फ़र्ज़ होने की हक़ीक़त से वाक़िफ़ हैं इसलिए हर साल ख़ुसूसन रमज़ानुल मुबारक में ज़कात, फितरा, सदक़ा, ख़ैरात, अतियात, दान, डोनेशन अदा की जाती है और इस फ़रीज़े से चश्मपोशी नहीं की जाती।

क्या ही अच्छा हो जो मुल्क में ज़कात का इज़्तेमाई नज़्म क़ायम हो जाए और किसी एक इदारे को ज़कात जमा करने नीज़ उसे उन मदों में ख़र्च करने की ज़िम्मेदारी दे दी जाए जिसका हुक्म दिया गया है। चूंकि ऐसा कोई नज़्म (व्यवस्था) मौजूद नहीं है इसलिए हर साहबेहैसियत मुसलमान अपने तौर पर किसी नादार ख़ानदान या किसी मुस्तहिक़ इदारे का इन्तेख़ाब करता है और ज़कात की रक़म उसके हवाले कर देता है। बाज़ लोग ज़कात के ग़लत इस्तेमाल से बचने के लिए ये ऐहतियात करते हैं कि मुस्तहक़ीन में अपने हाथों से रक़म तक़सीम करने को तरजीह देते हैं जो कि एक क़ाबिलेसताईश एक़दाम है। लेकिन इसकी वजह से इज्तेमाई नज़्म का तसव्वुर मुतास्सिर होता है।

ऐसे हालात में जबकि कोई मर्कज़ी इदारा, ज़कात, फितरा, सदक़ा, ख़ैरात, अतियात, दान, डोनेशन की रकुमात के इन्तेहाई मोअस्सिर मसरफ़ या मसारिफ़ के लिए मुन्तख़िब नहीं किया जा सका है इसलिए इस बड़े और वसीअतर एक़दाम को मोअख़्ख़िर (लंबित) करते हुए फ़ौरी तौर पर इतना किया जा सकता है कि हर इलाक़े में किसी एक इदारे का इन्तेख़ाब अमल में लाया जाए और ज़कात, फितरा, सदक़ा, ख़ैरात, अतियात, दान, डोनेशन की रक़म उसी के हवाले कर दी जाए। ये इसलिए ज़रूरी है कि मुसलमानों के बहुत से काम ऐसे हैं जिनके लिए ख़तीर रक़म की ज़रूरत होती है और कोई भी इदारा इतनी ख़तीर (बड़ी) रक़म मुख़्तस (उपलब्ध) करने की अहलियत नहीं रखता। इसकी मिसाल यूं दी जा सकती है कि छोटे-बड़े तमाम शहरों में ग़रीबों और नादारों के इलाज मआलेजा के लिए लाखों रूपये दरकार होते हैं। आज के दौर में अस्पताल के एख़राजात का भार उठाना किसी भयानक ख़्वाब से कम नहीं है। मुख़्तलिफ़ इदारे ग़रीबों और नादारों की तिब्बी इमदाद करते ज़रूर हैं लेकिन जितने रूपये की हाजत होती है उतनी रक़म कोई एक इदारा फ़राहम नहीं कर पाता। चुनांचे मरीज़ के रिश्तेदारों को दर-दर की ठोकरें खानी पड़ती हैं। अगर ज़कात, फितरा, सदक़ा, ख़ैरात, अतियात, दान, डोनेशन की रकुमात हर इलाक़े या शहर में किसी एक इदारे के सुपुर्द कर दी जाए तो तिब्बी इमदाद की एक बहुत बड़ी ज़रूरत पूरी हो सकती है और मरीज़ के रिश्तेदार मुख़्तलिफ़ इदारों के दरवाज़े खटखटाने की ***'ज़िल्लत'*** से बच सकते हैं। ये एक छोटी सी मिसाल है। ऐसे कई काम हैं जो रूपये की क़िल्लत के सबब पायएतकमील (पूर्ण होने) तक नहीं पहुंच पाते। अगर ज़कात, फितरा, सदक़ा, ख़ैरात, अतियात, दान, डोनेशन का इज्तेमाई नज़्म (सामूहिक व्यवस्था) क़ायम हो जाए तो ऐसे काम चुटकी बजाते पूरे हो सकते हैं।

वो इदारे, तन्ज़ीम और ट्रस्ट जो ज़कात, फितरा, सदक़ा, ख़ैरात, अतियात, दान, डोनेशन की रक़म कुबूल करते हैं, अलहम्दुलिल्लाह इसके सही मसरफ़ के तक़ाज़ों पर पूरे भी उतरते हैं लेकिन जितनी रक़म उनके पास होती है वह उतनी ही मदद कर पाते हैं। मिसाल के तौर पर किसी एक इदारे को ज़कात के नाम पर एक लाख रूपये मिले हों तो वह बीस बेवाओं को माहाना चार सवा चार सौ रूपये से ज़्यादा रक़म नहीं दे सकता। किसी भी बेवा का घर चार सौ रूपये में नहीं चल सकता क्योंकि ये एक मामूली रक़म है जबकि इदारा सालाना एक लाख रूपये की ख़तीर (बड़ी) रक़म तक़सीम कर रहा है और इस ख़तीर (बड़ी) रक़म से कोई बड़ा काम इस तरह अमल में लाया जा सकता है कि इससे उन बेवाओं को रोज़गार मिले। क्या यह मुमकिन नहीं ? यक़ीनन मुमकिन है बशर्ते कि

1. हम इस जानिब तवज्जेह दें और ज़कात , फितरा, सदक़ा, ख़ैरात, अतियात, दान, डोनेशन की तक़सीम के मंसूबाबन्द तरीक़ों पर अमलपैरा हों और

2. इज्तेमाई नज़्में ज़कात , फितरा, सदक़ा, ख़ैरात, अतियात, दान, डोनेशन के तहत किसी एक या दो इदारों को ज़कात, फितरा, सदक़ा, ख़ैरात, अतियात, दान, डोनेशन की रक़म फ़राहम करें। ज़रा सोचें कि इस मुल्क के 20 करोड़ मुसलमानों में अगर दो करोड़ मुसलमान भी साहबेहैसियत हैं जो औसतन 500 रूपये के हिसाब से ज़कात आदि अदा करते हैं तो मज़मुई तौर पर पूरे मुल्क में दस अरब रूपये की ख़तीर रक़म हमारे पास होती है जिसे पेशेनज़र रखा जाए तो शायद मुसलमानों में गुर्बत के ख़ात्मे के लिए चन्द एक बरस ही दरकार होंगे। ये बिल्कुल ऐसा ही मामला है कि हम इस मुल्क में 20 करोड़ की तादाद में होने के बावजूद महज़ मुत्तहिद न होने की वजह से परेशान रहते हैं। दस अरब की रक़म हर साल ग़रीबों और नादारों में तक़सीम करने के बावजूद अगर मुसलमानों में गुर्बत पाई जाती है तो समझ लीजिए कि ये सूरतेहाल हमें कोई ऐसी हिकमतेअमली अपनाने की दावत दे रही है जो ज़कात, फितरा, सदक़ा, ख़ैरात, अतियात, दान, डोनेशन के ज़्यादा मोअस्सिर इस्तेमाल में अहम रोल अदा कर सकती है। क्या हम इस दावत को कुबूल करेंगे?

t t t

मिल्लते इस्लामिया हिन्द जिस तरह इस वक़्त गुरबत व अफ़लास से दो-चार है उसके लिए एक मुनज़्ज़िम व मंसूबाबंद जद्दोजहद की शदीद ज़रूरत है। क़ौमे मुस्लिम की ये ख़ुशनसीबी है कि इस्लाम ने उसे ज़कात जैसा बेनज़ीर मआशी नुस्ख़ए कीमिया अता किया है। मौलाना अबूल क़लाम आज़ाद ने अपनी तसनीफ़ ''हक़ीक़ते ज़कात'' में बैतुलमाल के क़याम पर ज़ोर दिया है कि ये एक समाजी फ़र्ज़ है जिस तरह फ़र्ज़ नमाज़ की अदायगी के लिये ज़मात मुस्तहिब है उसी तरह नज़्में ज़कात और उसकी मुन्सेफ़ाना तक़सीम के लिये बैतुल माल ज़ख़ीरएदुनिया व आख़िरत क़रार पाता है। ये हम तमाम मुसलमानों की ज़िम्मेदारी है कि इबादत का मसला हो या दीगर मामलात का, इज़्तेमाईयत की बरकात बेशुमार है। यही इस्लाम की बुनियादी तालीम भी है। ज़रूरत इस बात की है कि इज़्तेमाई नज़्में ज़कात क़ायम हो और मौसमी मेंढ़कों की तरह आवाज़ लगाकर कोई देने वाला और कोई लेने वाला हाथ शर्मिंदा न हो। इस क़ारे ख़ैर को सालभर जारी रहना चाहिए कि देने वाला शाकिर और मांगने वाला आसूदा हो जाए।

इज़्तेमाइयत ही इस्लाम की बुनियाद है

(डॉ. अबुल क़लाम आज़ाद की कलकत्ता में आज़ादी से पहले इज़्तेमाईयत के मौज़ू पर दी गई एक पूरअस्र तक़रीर)

बरादराने मिल्लत,

पहले मेरी आवाज़ इस मैदान में एक महदूद (सिमित) हल्के तक पहुंचती थी पिछले चंद सालों से पूरे मैदान में अंजुमन की कोशिशों और साइंस की एक मुफ़ीद इजाद (माईक सिस्टम) के ज़रिए पहुंचने लगी। लेकिन इस मर्तबा जैसा की मुझे यक़ीन दिलाया गया है मेरी आवाज़ हिन्दूस्तान के गोशे – गोशे में पहुंच रही है। बल्कि इस मर्तबा इस बात का भी यक़ीन दिलाया गया है कि हिमालय की चोटियां, समुंदर की मौज़े और सहराए अरब के बगुले भी मेरी आवाज़ को रोक नहीं रहे है। मुंबई, कोलकाता से 1300 मिल के फ़ासले पर है, पेशावर 1500 मिल दूर है लेकिन मैं तुमसे पूछता हूं कि तुम्हारें कानों से तुम्हारे दिल की दुनिया कितनी दूर है मेरी आवाज़ तुम्हारों कानों के पर्दे से टकराकर रह जाती है और दिल कोई असर कुबूल नहीं करता। वह दिल जिस पर तुमने क़ुफ़्ल चढ़ा लिए हालांकि मेरे मुख़ातिब तुम्हारे कान नहीं बल्कि तुम्हारे दिल है।

जिस हक़ीक़त को एक मुद्दत से मैं तुम्हारे सामने रखता आया हूं, आज फिर उसी हक़ीक़त को तुम्हारे कानों तक पहुंचाता हूं और क्या इतने बड़े इंसानी हुजूम में चंद इंसान भी ऐसे नहीं, जिनके दिलों की सलाहियत इस हक़ीक़त को कुबूल कर सके। मैं पूरे 30 बरस के ग़ौर व फ़िक्र के बाद जिसकी कोई सुबह और शाम ऐसी नहीं गुज़री की मैंने पूरी तवज्जोह और पूरी दिल सोज़ी के साथ ग़ौर व फ़िक्र न किया हो, इस नतीज़े पर पहुंचा हूं कि मुसलमानों की इज्तेमाई फ़लाह व सुलाह बजुज़ इसके किसी दूसरे मामलात पर मौकूफ़ (आधारित) नहीं है, जो कुरआन के हर सफ़हे पर लिखा हुआ तुम देखोंगे– ***अक़ामतिस सलाति व इताइज़ ज़काति*** (क़यामे नमाज़ और अदाएगीए ज़कात) और यही दो 1मसाईल ऐसे मसले है जिनको तुम ने सबसे ज़्यादा ग़फ़लत के हवाले कर रखा है। कुरआने करीम ने इस मसले पर सबसे ज़्यादा ज़ोर दिया। सबसे ज़्यादा ताकीद की, मगर आज इन्हीं दोनों मसाईल को तुमने सबसे ज़्यादा पसेपुश्त (पीछे) डाल दिया है। सबसे ज़्यादा ग़फ़लत (वह ग़फ़लत जो इंकार तो नहीं, लेकिन क़रीब इंकार ज़रूर है) इन्हें ग़फ़लत की नज़र कर दिया है।

हांलाकि कुफ़्र व इस्लाम के अंतर के संबंध में भी इसी नमाज़ व ज़कात को म्यार (स्टेंडर्ड) क़रार दिया गया है। फ़रमायाः ***फ़ईनताबु व अक़ामुस सलाता वआतुज़ ज़काता फ़इख़वानोकुम फ़िद्दीन*** (9:11) तर्जुमा– 'बैहरेहाल अगर ये बाज़ आ जाए नमाज़ क़ायम करे, ज़कात अदा करे तो फिर उनके ख़िलाफ़ तुम्हारा हाथ नहीं उठना चाहिए। वह तुम्हारे दीनी भाई हो गए।'

वह अगर पिछली बदआमालियों (बूरे अचरणों) से ताइब (तौबा करें) हो जाए, नमाज़ पढ़े और ज़कात की पाबंदी का इक़रार करे तो वह भी तुम्हारी बिरादरी में शामिल किए जा सकते है।

मालूम हुआ कि शर्ते इस्लाम, इन्हेसार व मदारे इस्लाम, नेक अमली के साथ – साथ मशरूत(शर्तों सहित) है क़यामे सलात(नमाज़)और अदाए ज़कात से। ग़ौर करोगे तो ख़ुद समझ लोगे कि इस्लामी आमाल व एहकाम पूर्ण रूप से इज्तेमाईयत (सामूहिकता) के हामिल (तरफ़दार) है। इस्लाम अपने हलका बग़ोश अफ़राद (आदमियों के समूह) से ख़ुद उन्हीं के मफ़ाद (हितों) के लिए चाहता है कि उनका हर अमल इज्तेमाई (सामूहिक) हो। इसीलिये फ़र्ज़ क़रार दिया गया है कि नमाज़ हर मुसलमान मजबूरी की स्थिति को छोड़कर हमेशा जमाअत के साथ अदा करे। अगर रोजगार की

तलाश व रोज़ी के ज़रिए बाधित न हो तो लाज़िल है कि कम से कम एक वक़्त की नमाज़ ज़रूर मुसलमानों की जमात के साथ अदा करे। इसी तरह ज़कात के बारे में भी हुक़्म है।

मुसलमानों की ज़कात भी इज्तेमाई (सामूहिक) सूरत से एक जगह अदा की जाए। कुछ परवाह नहीं, अगर सारे शहर की तन्ज़ीम नहीं हो सकती।

जो लोग अलग –अलग ज़कात अपने तौर पर अदा करते है मैं पहले कह चुका हूं कि दुरस्त नहीं और आज मैं एक क़दम और आगे बढ़ता हूं और इस मेम्बर से पूरी ज़िम्मेदारी के साथ एलान करता हूं कि सिर्फ़ यही नहीं कि यह ज़कात जो इन्फ़ेरादी (व्यक्तिगत) तौर पर अदा की गई है दुरूस्त नहीं बल्कि सही और उचित यह है कि वह ज़कात ही नहीं कोई दूसरा नाम दिया जा सकता है। ज़कात का नाम नहीं दिया जा सकता।

इसलिए जब तक तुम बहैसियत मुसलमान इज़्तेमाई (सामूहिक) तौर पर कुरआन के हुक़्म और मंशाए फ़ितरत (प्रकृति के मंशा अनुसार) के मातेहत अपने आमाल विशेष रूप से नमाज़ व ज़कात को तंज़ीम के साथ अदा नहीं करते, तुमसे वह तमाम दीनी बरक़ात और वादे जिनकी तुमको तलाश है हमेशा तुमसे दूर रहेंगे और जिस दिन तुमने इज़्तेमाई (सामूहिक) शक्ल और आमाल में इज़्तेमाई (सामूहिक)हुस्नै निज़ाम (अच्छी व्यवस्था) पैदा कर लिया यक़ीन करो के छीनी हुई तमाम दौलत तुमको फ़िर सौंप दी जायेगी।

मैं तुमसे आज फिर ताकीद करता हूं कि अपने अमाल में इज्तेमाईयत (सामूहिकता) की सूरत पैदा करो, उठो और हर – हर क़स्बे और मुहल्लों में कम से कम पांच आदमियों की एक जमात बना लो छः भी, नहीं सिर्फ़ पांच जो ज़कात की तहसील व तन्ज़ीम (वसूली व व्यवस्था)करें और उसे पूरी ज़िम्मेदारी और बाक़ायदगी के साथ सर्फ़ (खर्च) करें। तुम देखोगे कि बहुत जल्द पूरा मुहल्ला बल्कि पूरा शहर तुम्हारी कमेटी का मेम्बर बन जाएगा और ये एक काबिले तक़लीद (अनुसरन योग्य)नमूना बन जाएगा, जिस पर आमिल होकर ख़ैर व बरकत के मुतलाशी (तलाश करने वाले) अपनी शाआदतों और गुमशुदा मतआ व दौलते हशमत ढूढेंगे। क्या तुम में ऐसे पांच दिल भी नहीं जो मेरी बात दिल से सुन सकें।

याद रखों महज़ फ़िकरी वसाईल (वैचारिक साधनों) से तुम अपने ख़ोए हुए वक़ार और दौलत को हासिल नहीं कर सकते। बुनियादी चीज़ जिसको तुमने अपनी ग़फ़लतों और गुमराहियों की नज़र कर दिया है यानी अमल और अमले इज्तेमाई (सामूहिक) जब तक उस पर इस्तेवार और मज़बूती के साथ क़ायम नहीं होते तुमको उस वक़्त तक ख़ोया हुआ वक़ार या छिनी हुई दौलत वापस नहीं हो सकती।

फ़िकरी वसाईल को महज़ दिमाग़ के अंदरूनी रंग व रौग़न समझों, बाहर का रंग व रौग़न नहीं है। बाहर की दिवारे जब ही रंगीन होंगी कि अमल का रंग व रौग़न उभर आए और अमल में रंग व रौग़न जब ही पैदा होगा, जब जड़ और बुनियाद मज़बूत रखोगे।

तुम किसी दरख़्त को हरा भरा सरसब्ज़ व शादाब रखने के लिए शाखों और पत्तों में पानी डालोंगे तो दरख़्त हरगिज़ सरसब्ज़ न होगा। अलबत्ता अगर तुम जड़ में पानी दोगे और उसको हरा भरा रखोगे तो तमाम दरख़्त सब्ज़ व शादाब और बारावर रहेगा। लिहाज़ा अगर तुम अपने ख़ोए हुए वक़ार और दौलत की वापसी की ख़ोज में हो। अगर तुम मौज़ूदा पस्ती से बामे रफ़अत पर दुबारा पहुंचना चाहते हो तो जड़, बुनियाद और असल की शादाबी की फ़िक्र करो। यानी अपनी नमाज़ों पर इस्तेवार हो जाओं और इज़्तेमाई (सामूहिक)शक्ल में ज़कात की तन्ज़ीम व तक़्सीम पर क़ायम व आमिल हो जाओं कि यहीं दोनों असल व बुनियाद हैं और इन्हीं पर मज़बूती के साथ क़ायम व आमिल होने पर ख़ोई हुई दौलत की वापसी का मदार है। *अबुल क़लाम*

e e e e e

भारी महर और जहेज़ की ज़्यादती ग़ैर इस्लामी

इनसे बहुत सी ख़राबियां और बुराइयां पैदा हो रही है

शरियते इस्लामी इंसानी फ़ितरत के मिज़ाज के ऐन मुताबिक़ है। शरियत में जिन उमूर पर तवज्जोह दी गई है और मुसलमानों को जिन बातों का पाबंद किया गया है उन सब में इंसानों की फ़लाह व बहबूद और आसानियों को महलूज़ रखा गया है। मिसाल के तौर पर निकाह और उसके मामलात पर शरियत की रहनुमाई को लीज़िए शरियत में निकाह को बहुत ही आसान बना दिया है। वालिदैन अपने बच्चे और बच्चियों के लिए दीनदार साथी तलाश करें और सादा तौर पर अहबाब को जमा करके निकाह कर दें वालिदैन हसबे इस्तेताआत अपनी बच्ची को कुछ लेन-देन भी कर दें तो कोई मुज़ाएक़ा नहीं है ख़याल रहे कि ये लेन-देन हद से तजावुज़ न करें और मां-बाप किसी से क़र्ज़ लेकर या मांग कर जहेज़ का सामान न दें जितना मुमकीन हो सके उतना कर दें। वैसे शरियत में जहेज़ की कोई असलियत नहीं है अलबत्ता चूंकि हमारे नबी[सल्ल.] ने चंद चीज़ें अपनी बेटी फातिमा[रज़ि.] को अता की थी तो हम भी अपनी बच्ची के लिए कुछ दे सकते हैं। अगर न भी दे तो कोई हरज नहीं है अलबत्ता लड़के वालिद या ख़ुद मुख़्तार लड़के को वालिमा करना चाहिए ये सुन्नत है। इसी तरह महर का मामला भी है। लड़की का महर भी बहुत ज़्यादा नहीं होना चाहिए। रसूलुल्लाह[सल्ल.] ने ज़्यादा महर की मुमानिअत फ़रमाई और जो कुछ भी मयस्सर हो आप इसी पर महर मुक़र्रर फ़रमा दिया करते थे।

आमिर बिन रबीअ बयान करते है कि क़बीला बनी क़रादा की एक औरत ने एक जोड़ा जूती के बदले एक शख़्स के निकाह किया आप[सल्ल.] ने उससे फ़रमाया तूने अपने आपको दो जूतियों के बदले हवाले कर दिया और इसी पर राज़ी हो गई उसने जवाब दिया हां आपने उसको निकाह बाक़ी रखने की इजाज़त दे दी। (तिरमिज़ी)

हज़रत जाबिर बयान करते है कि जिसने अपनी बीवी के महर में दोनों हाथों को भरकर खजूरें या सत्तू दिया उसने अपनी बीवी को अपने ऊपर हलाल कर लिया (यानि महर मुअज्जल में इस क़द्र ही देना काफ़ी है) अबू दाऊद

हज़रत उमर फ़ारूक़[रज़ि.] भारी महर के सख़्त मुख़ालिफ़ थे और मुसलमानों को ज़्यादा महर मुक़र्रर करने से मना फ़रमाते थे। एक मर्तबा उन्होंने फ़रमाया उमर बिन ख़त्ताब कहते है कि ख़बरदार औरतों का महर ज़्यादा न बांधों अगर ज़्यादा महर बांधना बुज़ुर्गी और अज़मत और अल्लाह के नज़दीक बुज़ुर्गी का सबब होता तो रसूलुल्लाह[सल्ल.] इस बात के ज़्यादा मुस्तहिक़ थे और मुझको मालूम है कि आपने अपने बीवी और बेटी का महर बारह औक़िया से ज़्यादा नही रखा *(अहमद तिरमिज़ी, अबू दाऊद, निसाई, इब्नेमाज़ा, दारमी)*

ख़ुद रसूलुल्लाह[सल्ल.] अपनी बीवियों के बहुत कम महर मुक़र्रर फ़रमाते थे जैसा कि मुंदरजा ज़ैल रिवायत से मालूम होता है -

अबू सलमा[रज़ि.] बयान करती है कि मैंने आयशा से मालूम किया नबी[सल्ल.] का महर कितना था ? उन्होंने फ़रमाया हुज़ूर[सल्ल.] का महर अपनी बीवियों के लिए बारह औक़िया और एक नश था फ़िर आयशा ने कहा कि नश को जानते हो मैंने कहा नहीं तो उन्होंने कहा निस्फ़ औक़िया ये सब मिलाकर पांच सौ दिरहम हुए।

शरियत ने वालिदैन को इस बात का पाबंद कर दिया है कि वह अपनी बेटियों को अपनी इस्तेताअत से ज़्यादा लेन- देन न करे और इस्तेताअत का मतलब ये नहीं कि अगर कोई शख़्स करोड़पति है तो वह लाखों का सामान जहेज़ में दे और खुल्लम खुल्ला सामान की नुमाईश करें। इस्तेताअत का मतलब ये है कि बेटी की दिलजोई के लिए कुछ लेन देन कर दे और अगर वह कुछ भी न दे तब भी उस पर कोई हरज नहीं है। इसी तरह लड़की के वारिसीन बहुत ज़्यादा महर बांधे क्योंकि ज़्यादा महर बांधने से बहुत सी ख़राबियां पैदा हो जाती है। सबसे पहली ख़राबी तो यही है कि शौहर उसको अदा नहीं कर पाता और मामला इसी तरह चलता रहता है यहां तक कि बीवी मौत के आग़ोश में चली जाती है या अगर मियां बीवी के दरम्यान एख़्तेलाफ़ पैदा होता है और नौबत तलाक़ तक पहुंचती है तब महर का मामला सामने आता है और शौहर से महर तलब किया जाता वरना आम तौर पर ऐसा रिवाज हो गया है कि बेचारी बीवी शौहर से महर तलब करना नहीं चाहती, ग़ैर तालीमयाफ़्ता बीवियां तो इतनी नासमझ और सादा होती है कि अगर शौहर उनको महर देना भी चाहे तो वह बेचारियां फूट-फूटकर रोने लगती है और ये समझती है कि शौहर हमें तलाक़ दे रहा है गांव और देहातियों में आज भी ऐसी मुस्लिम ख़्वातीन की तादाद बहुत ज़्यादा है जिनको महर के मुताल्लिक़ मालूमात ही हासिल नहीं है और वह महर की अदायगी को तलाक़ समझ बैठती है।

सबसे पहली बात तो ये समझ लेना चाहिए कि मौजूदा दौर में मुसलमानों के अंदर भी जहज़ का लेनदेन शुरू हो गया है वह क़तई ग़ैर इस्लामी फ़ैल है जिससे मुसलमानों के अंदर बहुत सी ख़राबियां और बुराईयां पैदा हो रही है।सबसे बड़ी ख़राबी तो ये पैदा हो गई है कि ज़्यादा जहेज़ की वजह से ग़रीब मुसलमान लड़कियां कुंवारी बैठी हुई है और शादी के इंतेज़ार में बूढ़ी होती जा रही है। न उनके पास सामान जहेज़ है और न उनकी शादी हो रही है, क्या इससे बड़ा और कोई अलमिया हो सकता है कि इस्लाम ने निकाह को जितना आसान और सादा बनाया था मुसलमानों ने इसी निकाह को सबसे ज़्यादा महंगा और मुश्किल बना दिया है। सामाने जहेज़ का ज़बरदस्त लेनदेन शादियों में तरह तरह के खाने डेकोरेशन पर बेतहाशा ख़र्च और इसी ख़र्च के मुताबिक महर मुक़र्रर करना क्या ये सब बातें ग़ैर इस्लामी नहीं है और इन बातों की वजह से ग़रीब मुसलमान बच्चियां शादियों से महरूम नहीं हो रही है इस जानिब हंगामी तौर पर तवज्जोह देनी होगी वरना हमारा मआशरा मज़ीद ख़राबियों में मुबतेला हो जाएगा।

V V V

साल भर तक ख़ैरात करता रहा इसके बाद नीयत की कि जो कुछ दिया है वह ज़कात है तो इस तरह ज़कात अदा न हुई। कानूने शरीयत हज़रत मौलाना शमशुद्दीन अहमद ज़ाफ़री, रिज़वी

अल्लाह तआला ने सूरह तौबा की आयत 34-35 में ज़कात न देने वालों, कम देने वालों या ज़कात से बचने वालों के ख़िलाफ़ कड़ी चेतावनी (वईद) फ़रमाई है। वहीं अल्लाह ने सदक़ा व अतियात देने पर अपनी करम फरमानियां अता करने का वायदा भी किया है।

मुस्लिम दौरे हुकूमत की शानदार यूनिवर्सिटियां

मुसलमानों ने इल्म की रौशनी से पूरी दुनिया को मुनव्वर कर दिया

'जिस ज़माने में कि यूरोप जहालत की तारीकी में डूबा हुआ था उसी ज़माने में यानि आज से चौदह सौ साल पहले दुनियाए इस्लाम में अज़ीमुश्शान यूनिवर्सिटियों, शानदार मदरसों और कॉलेजों का जाल हर तरफ़ फैला हुआ था। जनाब नूर अहमद ने ज़ैल के मोहक़्क़िक़ाना मज़मून में ये बताया है कि करूनेवस्ता के मुसलमानों ने किस तरह उलूम व फ़ुनून के शोबे में दुनिया की रहनुमाई की है और उन्होने पूरी दुनिया को इल्म की रौशनी है मुनव्वर कर दिया था।'

मुसलमानों ने जिस तरह ज़िन्दगी के दूसरे शोबों में दुनिया की रहनुमाई की है इसी तरह उलूम व फ़ुनून की तरवीज में भी जो नुमायां हिस्सा लिया है और ख़ुद रसूल मोहतरम उलूम व फ़ुनून की तरवीज के बहुत बड़े हामी थे इसलिए मुसलमानों ने उलूम व फ़ुनून की तरक़्क़ी को भी अपने दीन का एक जुज़्व बना लिया था। तारीख़ गवाह है कि मुसलमानों के दौरे एक़तेदार में तालीम बिजली जैसी सरअत के साथ फ़ैलती चली गई और उस ज़माने का कोई शहर कोई क़स्बा या गांवों ऐसा बाक़ी नहीं रहा जहां इबतेदाई और सानवी तालीम के लिए मदारिस मौजूद न हों।

मुसलमानों के तालीमी शग़फ़ के बारे में प्रोफ़ेसर हेल्ड्रिज़ और प्रोफ़ेसर रायबेरिया ने लिखा है मुसलमानों के दौरे हुकूमत में तमाम बच्चों के लिए इबतेदाई तालीम का मुफ़्त इंतेज़ाम किया जाता था और आलातालीम हासिल करने के लिए तालिबे इल्म कॉलेजों और इल्मी इदारों में दाख़िल होने के अलावा मुमताज़ उलमा के हल्क़एदर्स में भी कसरत से शामिल होते थे जो वह अपनी क़यामगाहों पर देते थे और उस ज़माने में शाहाने वक़्त शाहज़ादे जागीरदार उमरा इल्मी इदारों, मदरसों और कॉलेजों की दिल खोलकर सरपरती करते थे। नीज़ लाइब्रेरियों और कुतुबख़ानों के क़याम को अपना मुक़द्दस फ़रीज़ा तसव्वुर करते थे।

तारीख़ से ये बात बिलकुल वाज़ेह है कि दुनिया का सबसे पहला और निहायत शानदार कॉलेज ख़लीफ़ा अलमामून ने बग़दाद में क़ायम किया था और उसके बाद दूसरी यूनिवर्सिटी की बुनियाद जो 'निज़ामिया' के नाम से मौसूम है। शाहाने सलजूक़ के लायक़ वज़ीरे आज़म निजामुलमुल्क तूसी ने 1065 ईस्वी में रखी थी। इसमें तुलबा के क़याम के इंतेज़ाम भी था और उसी ज़माने में मुस्तनसरिया के नाम से जो युनिवर्सिटी क़ायम की गई थी ये भी अपनी नोइयत के ऐतेबार से दुनिया की एक शानदार युनिवर्सिटी थी।

उस अहद की दूसरी मुमताज युनिवर्सिटियां, रशीदिया, अमानिया, तरख़ानियां,

ख़ातूनियां और शरीफ़िया शाम में थी और सलाहिया मिस्र में क़ायम थी। निज़ामियां युनिवर्सिटी की नहज पर जो कॉलेज और मदारिस मुमलेकते इस्लामिया में जाबजा क़ायम थे वह ये है बग़दाद में तीन, दमिश्क में दो, इस्कंदरिया में तीन, मौसल में 6, इनके अलावा क़ाहिरा निशांपुर, समरक़ंद, इस्फ़हान,मरू,बलग़, ग़ज़नीन और लाहौर में एक-एक कॉलेज क़ायम था।

स्पेन के सिर्फ़ एक शहर क़रतबा में कई सौ कॉलेज क़ायम थे जिसमें मजहबी तालीम के अलावा फ़लसफ़ा अदब तारीख़ तिब और साईंस की तालीम भी दी जाती थी। स्पेन में मुसलमानों ने ऐसी युनिवर्सिटियों की बुनियाद रखी थी जो बाद के ज़मानों में भी अज़ीम युनिवर्सिटियां शुमार होती रही है । चूनांचे क़रतबा, ग़रर्नाटा और मलाग़ा की युनिवर्सिटियां मुसलमानों ही की क़ायम की हुई है।उनमें तालीम हासिल करने के लिए तालीबेइल्म अफ़्रीक़ा यूरोप और एशिया से आते थे और स्पेन की उन युनिवर्सिटियों की ही बदौलत यूरोप में ईल्म की रौशनी फ़ैली थी वर्ना इससे पहले पूरा यूरोप जहालत की तारीकी में ग़र्क़ था।

आला तालीमी इदारों और युनिवर्सिटियों के अलावा बहुत से उस्ताद और उलमा अपने घरों, मस्जिदों और ख़ानक़ाहों में भी लोगों को तालीम देते थे। मस्जिदों और ख़ानक़ाहों में तुलबा के क़याम और तआम का भी इंतेज़ाम किया जाता था और तुलबा के तमाम मसारिफ़ औक़ाफ़ की आमदनी से अदा किये जाते थे। ख़ानक़ाहों ने मुस्लिम तुलबा ही क़याम नहीं करते थे बल्कि इसाई और दिगर मज़हबों के तुलबा का क़याम भी होता था और उनके जुमला मसारिफ़ मुस्लिम औक़ाफ़ से अदा किये जाते थे।

मसाजिद और ख़ानक़ाहों में जो असातेज़ा और उलमा तालीम देते थे वह सिर्फ़ मज़हबी तालीम तक ही महदूद नहीं थी बल्कि उलूम व फ़ुनून के हर शोबे पर दर्स दिया जाता था। मुबाहिसे होते थे और उन मुबाहिसों में तालिबे ईल्म ही नहीं बल्कि अव्वाम भी शिरकत करते थे। चूनांचे नासिर ख़ुसरो ने ग्यारहवीं सदी ईस्वीं में लिखा है कि क़ाहिरा की मस्जिद के इल्मी मुबाहिसों में रोज़ाना पांच हज़ार अफ़राद शिरकत करते थे इस अहद के मुस्लिम मुल्कों में जाबजा तर्जुबागांहे भी क़ायम थी जिनके ज़रिए इल्म नुजूम की तालीम दी जाती थी इस तरह तिब्बी दर्सगांहे भी क़ायम की और शिफ़ाख़ांनों से भी तिब्बी दर्सगाहों का काम लिया जाता था। मुख़्तसर ये कि मुस्लिम दौरे एक़्तेदार में उलूम व फ़ुनून की रौशनी तेज़ी से फ़ैल रही थी।

उलूम व फ़ुनून की तरक़्क़ी के लिए चूंकि काग़ज़ एक निहायत ही ज़रूरी चीज़ है इसलिए मुसलमानों में काग़ज़साज़ी के फ़न को भी काफ़ी तरक़्क़ी दी थी चूनांचे ख़ुलफ़ए अब्बासिया के अहद में काग़ज़साज़ी एक अहम घरेलू दस्तकारी बन गई थी जाबजा घरों में छोटे-छोटे क़ाग़ज़साज़ी के कारख़ाने क़ायम हो गए थे जिनमें कि निहायत नफ़ीस काग़ज़

तैयार होता था। फ़न तबाअत चूंकि एजाद नहीं हुआ था इसलिए किताबें उमूमन हाथ से लिखवाई जाती थी और कुतुब फ़रोश किताबे लिखवा–लिखवा कर बड़ी–बड़ी क़ीमतों में फ़रोख़्त करते थे।

पूरी मुमलेकत इस्लामिया में इस क़द्र लाइब्रेरियां क़ायम थी जिनका शूमार ही मुश्किल है। दौलत मंद लोगों के यहां ज़ातीकुतुब ख़ानों का रिवाज आम हो गया था ग़रज़ की मुमलेकत इस्लामिया के तूल व अर्ज़ में हज़ारहा पब्लिक और प्राइवेट लाइब्रेरिया क़ायम थी।

यूरोप के मुमताज़ मोवर्रेख़ीन इस बात को तस्लीम करते है कि जहालत की तारीकी में भटकने वाले यूरोप को मुसलमानों ने जो सबसे क़ीमती तोहफ़ा दिया है वह काग़ज़साज़ी की सनत और इल्म की रौशनी है और अहले यूरोप ने उलूम व फ़ुनुन के सिलसिले में जो कुछ भी हासिल किया है वह मुसलमानों से हासिल किया है चूनांचे क़ुरआने करीम लिखता है कि अगर स्पेन के इस्लामी इदारों के ज़रिए यूरोप में इल्म की रौशनी न फ़ैली होती तो न जाने कब तक अहले यूरोप जहालत की तारीकी में भटकते रहते।

उलूम व फ़ुनुन के फ़रोग़ के लिए मुस्लिम हुकूमतों ने क्या कुछ किया है इसका अंदाज़ा इससे मालूम हो सकता है कि दसवीं सदी ईस्वी में मोसल में एक बहुत बड़ी लाइब्रेरी क़ायम की और जो लोग इस लाइब्रेरी से किताबों की नक़ल करना चाहते थे उन्हें काग़ज़ मुफ़्त मुहैय्या किया जाता था और हर क़िस्म की सहुलतें उनके लिए फ़राहम की जाती थी और उसी ज़माने में बसरा की लाइब्रेरियों के बानी ने ऐलान किया था कि जो लोग इस लाइब्रेरी में तहक़ीक़ और मुतालए का काम करेंगे उन्हें माकूल वज़ीफ़ा दिया जाएगा।

कैथोलिक़ इंसाइक्लोपीडिया के मुताबिक़ उस वक़्त यूरोप की बड़ी से बड़ी लाइब्रेरी में ज़्यादा से ज़्यादा डेढ़ हज़ार किताबें थी जबकि सिर्फ़ क़रतबा के कुतुबख़ाने में साठ लाख तक किताबों की मौजूदगी का अंदाज़ा किया जाता है। इसी तरह क़ाहिरा के कुतुब ख़ाने अलहकम में बीस लाख और तराबिल्स के कुतुबख़ाने में जिसे सलीबी जंगों के सिलसिले में ईसाइयों ने जला दिया था तीस लाख किताबें मौजूद थी। इन बातों से ये अंदाज़ा लगाना दुश्वार नहीं कि उस ज़माने में जबकि तबाअत का कोई इंतेज़ाम नहीं था मुसलमानों ने किताबें जमा और नक़ल करने में कैसी सउबतें बर्दाश्त की होंगी।

हक़ीक़त ये है कि एक तरफ़ तो पूरी दुनियाए इस्लाम में कुतुबख़ानों का जाल फ़ैला हुआ था और दूसरी जाबिन बड़ी–बड़ी युनिवर्सिटियां दर्सगांहे कॉलेज तरवीज इल्म में मसरूफ़ थे। ग़रज़ ये कि इस तरह मुसलमानों ने अपने ज़माने उरूज में पूरी दुनिया को उलूम व फ़ूनुन की रौशनी में जगमगा दिया था।

l l l

छत्तीसगढ़ बैतुलमाल फ़ाउंडेशन, रायपुर

द्वारा तालीमी साल 2006-2007 में

5वीं से 12वीं तक दिये गये स्कॉलरशिप की सूची

<u>नोट</u> :- प्रत्येक तालेबे इल्म को वार्षिक स्कॉलरशिप 1200.00 रुपया 10 माह की किस्तों में दिये गये।

<u>स्कूल - इक़रा इंग्लिश स्कूल पंडरी, रायपुर.</u>

1. मिस अस्मा शरीफ़ D/0 बेग़म नज़मा शरीफ़, नूरानी चौक, राजातालाब, रायपुर. क्लास - 5 वीं
2. मिस रेहाना बानो D/0 मोहम्मद मेहमूद, ताज नगर, पंडरी,रायपुर. क्लास - 6 वीं
3. मास्टर सैय्यद अदनान अली S/0 सैय्यद जावेद अली, नई बस्ती, राजातालाब रायपुर, क्लास - 5 वीं
4. मास्टर मोहम्मद सोहेल S/0 मोहम्मद शकील, राजातालाब रायपुर. क्लास - 6 वीं
5. मास्टर फ़राज़ अहमद S/0 मुस्ताक़ अहमद, नई बस्ती राजातालाब, रायपुर. क्लास - 6 वीं
6. मिस अलफ़िया बेग़म D/0 युसूफ़ ख़ान, नूरानी चौक, राजातालाब, रायपुर. क्लास - 8 वीं
7. मिस फ़िज़ा सरदारिया D/0 सलीम सरदारिया, नूरानी चौक, राजातालाब, रायपुर. क्लास - 8 वीं
8. मिस आफ़रीन परवीन D/0 फ़रीद अहमद, नूरानी चौक, राजातालाब, रायपुर. क्लास - 6 वीं

<u>स्कूल - नूरानी हाई स्केण्डरी स्कूल राजातालाब, रायपुर.</u>

9. मास्टर शाहरूक अली S/0 बसीर ख़ान, पंडरी, रायपुर. क्लास - 5 वीं
10. मास्टर मोहम्मद फ़रमान ख़ान S/0 मोहम्मद सज्जन ख़ान, राजातालाब, रायपुर. क्लास - 6 वीं
11. मिस काजल बानो D/0 अख़्तर ख़ान, ताज नगर, पंडरी,रायपुर. क्लास - 7 वीं
12. मिस ग़ौसिया मोमिन S/0 बेगम सायरा बेगम, राजातालाब रायपुर, क्लास - 5 वीं
13. मिस निक़हत परवीन D/0 शेख़ आलम, काली नगर, पंडरी, रायपुर. क्लास - 6 वीं
14. मिस शगुफ़्ता परवीन D/0 मोहम्मद शकील, नूरानी चौक, रायपुर. क्लास - 6 वीं
15. मिस हिना बेग़म D/0 मोहम्मद इसलाम, पंडरी, रायपुर. क्लास - 6 वीं
16. मिस गुलनाज़ फ़रहीन D/0 रफ़ीक़ ख़ान, राजा नगर, रायपुर. क्लास - 6 वीं
17. मास्टर मो. समीर अंसारी S/0 मो. शकील अंसारी, राजातालाब, रायपुर. क्लास - 7 वीं

<u>स्कूल - ऊर्दू गर्ल्स हाई सेकेण्डरी स्कूल, शास्त्री बाजार, रायपुर.</u>

18. मिस नूरीन फ़ातिमा D/0 वहीद अहमद, बैजनाथपारा, रायपुर. क्लास - 6 वीं
19. मिस नसरीन कौशर D/0 शेख निज़ामुद्दीन, तेलीबांधा , रायपुर. क्लास - 6 वीं
20. मिस सायरा बानो D/0 मो. सलीम, बैजनाथपारा, रायपुर, क्लास - 6 वीं
21. मिस सफ़ीना बानो D/0 मो. अकबर हाफ़ीज़, शहीद हमीद नगर, रायपुर, क्लास - 6 वीं
22. मिस शाहीन बेगम D/0 मो. युनूस तेली, मौदहापारा, रायपुर, क्लास - 6 वीं
23. मिस मदीना बी D/0 तुराब अली, अस्पताल वाले बाबा मंत्रालय, रायपुर, क्लास - 6 वीं

<u>स्कूल - दीगर स्कूलों के बच्चे.</u>

24. मास्टर उबैद ख़ान S/0 शाहिद ख़ान, बैरनबाज़ार, रायपुर. (होलीक्रास) क्लास – 9 वीं
25. मिस फ़रज़ाना शरीफ़ अंसारी D/0 इंतियाज़ शरीफ़ अंसारी, नयापारा, रायपुर. (रायपुर कान्वेंट) क्लास – 6 वीं
26. मास्टर मो. अशरफ़ S/0 मो. जाहिद, मोमिन पारा,रायपुर. (रायपुर कान्वंट) क्लास – 6 वीं
27. मास्टर शेख़ फ़ैज़ान S/0 शेख नज़ीर, शास्त्री बाजार, रायपुर. (बैजनाथपारा प्रा.शा.) क्लास – 5 वीं
28. मिस फ़रहीन सबा D/0 कमरुद्दीन, संजय नगर मस्जिद के पास, रायपुर.(संजय स्कूल) क्लास – 5 वीं
29. मास्टर मोहम्मद अलीम S/0 मो. सलीम हाफ़िज़, मोमिनपारा, रायपुर.(दाबके शा.) क्लास – 5 वीं
30. मिस शबीना अंजुम D/0 मो. ज़ीलानी, मोमिनपारा, रायपुर. (रायपुर कान्वेंट) क्लास – 5 वीं
31. मिस हलीमा कुरैशी D/0 सलीम कुरैशी, संजय नगर, रायपुर. (गरीब नवाज़) क्लास – 6 वीं
32. मास्टर ताबिश ख़ान S/0 शाहिद ख़ान, बैरनबाज़ार, रायपुर.(होलाक्रास) क्लास – 6 वीं
33. मिस ज़ैनब आरा D/0 मो. अफ़ज़ल, टिकरापारा, रायपुर. (लिटिल फ़्लावर) क्लास – 8 वीं
34. मिस राबिया कुरैशी D/0 सलीम कुरैशी, काशीराम नगर, रायपुर .(दीप वि. मंदिर) क्लास – 9 वीं
35. मिस नौशीन नाज D/0 सैफुद्दीन, पंडरी, रायपुर. (नूरानी स्कूल) क्लास – 5 वीं
36. मास्टर अकबर अली S/0 साजिद अली, पंडरी, रायपुर. (अमीरिया स्कूल) क्लास – 5 वीं
37. मास्टर शाह अहमद S/0 शाह मोहम्मद, पंडरी, रायपुर. (नूरानी स्कूल) क्लास – 6 वीं
38. मिस सलमा बेगम D/0 मरहूम अब्दुल मजीद, लोधीपारा, रायपुर. (नूरानी स्कूल) क्लास – 6 वीं
39. मिस हिना परवीन D/0 हबीबुद्दीन, पंडरी रायपुर . (नूरानी स्कूल) क्लास – 10 वीं
40. मिस सदफ़ परवीन D/0 मुश्ताक अहमद, राजातालाब, रायपुर. (इकरा स्कूल) क्लास – 8 वीं
41. मिस सितारा परवीन D/0 मो. सलीम, पंडरी, रायपुर. (नूरानी स्कूल) क्लास – 6 वीं
42. मिस नग़मा परवीन D/0 सैय्यद अब्दुल हुसैन, संजय नगर, रायपुर. (संजय स्कूल) क्लास – 10 वीं
43. मिस हीना कौसर D/0 याकुब कुरैशी, राजातालाब, रायपुर. क्लास – 11 वीं
44. मास्टर मो. आफ़क़ S/0 मो. अशफ़ाक़ अहमद, बैरनबाज़ार, रायपुर . क्लास – 12 वीं
45. मिस शाहिना परवीन D/0 एम.ज़ीलानी, मोमिनपारा, रायपुर . क्लास – 11 वीं
46. मास्टर शोएब हसन S/0 मोहम्मद हसन, संजय नगर, रायपुर. क्लास – 11 वीं

हायर सेकेन्डरी के लिये तालीमी साल 2006-2007 में दिये गये स्कॉलरशिप की सूची

नोट :- प्रत्येक तालेबे इल्म को वार्षिक स्कॉलरशिप 1500.00 रुपया 10 माह की किस्तों में दिये गये ।

1. श्री नईम अख़्तर ख़ान S/0 रमज़ान ख़ान, संतोषी नगर, रायपुर. (माधव स्कूल) क्लास-11वीं
2. मोहम्मद वसीम S/0 मोहम्मद सलीम, मोमिनपारा, रायपुर. (दाबके स्कूल) क्लास-11वीं
3. कुमारी जीनत परवीन D/0 एम. मुश्ताक़ अहमद, गुढ़ियारी, रायपुर. (माधव स्कूल) क्लास-11वीं

छत्तीसगढ़ बैतुलमाल फ़ाऊंडेशन, रायपुर

के द्वारा

फ़ख़्र-ए-मिल्लत एज़ाज़ 2007

के लिये नामांकित व्यक्ति

1. मोहतरमा शमशाद बेगम, गुण्डरदेही (सामाजिक कार्यकर्त्ता)
2. मोहतरमा नुदरत कुरैशी, बिलासपुर (सामाजिक कार्यकर्त्ता)
3. मोहतरमा डॉ. नूर बानो दल्ला, (मेडिकल)
4. मोहतरमा हाजिरा बेगम (शिक्षण)
5. मोहतरिम जनाब इरफ़ान कुरैशी (पत्रकारिता)
6. मोहतरिम जनाब आसिफ़ इक़बाल, कोरबा (पत्रकारिता)
7. मोहतरिम जनाब डॉ. मोहम्मद अमीन रिज़वी, कोरबा (सामाजिक कार्यकर्त्ता)
8. मोहतरिम जनाब हाजी डॉ. अमानुल्लाह ख़ान (मेडिकल)
9. मोहतरिम जनाब के. जी. अंसारी (मरहूम), बिलासपुर (सामाजिक कार्यकर्त्ता)
10. मोहतरिम जनाब हाजी मोहम्मद शफ़ीक़ (व्यवसायिक योग्यता)
11. मोहतरिम जनाब सईद ख़ाँ ख़ोख़र (शिक्षण)
12. मोहतरिम जनाब मोहम्मद रफ़ीक़ (एथलेटिक्स)
13. मोहतरिम जनाब पीर मोहम्मद, रतनपुर (एथलेटिक्स)
14. मोहतरिम जनाब हाजी रज़ा हैदरी (साहित्य)
15. मोहतरिम जनाब डॉ. अब्दुल गनी आदिल (व्यवसायिक योग्यता)
16. मोहतरिम जनाब बहादुर अली, राजनांदगाँव (व्यवसायिक योग्यता)
17. मोहतरिम जनाब एम. हाशिम ख़ान, रायपुर (कानून व्यवसाय)

6 6 6

छत्तीसगढ़ बैतुलमाल फ़ाउंडेशन द्वारा संचालित मदरसा कहकशाँ कांशीराम नगर के तुलबा की सूची

क्लॉस – पहली

1. कुमारी असमाँ बानो वल्द जनाब मोहम्मद इस्माईल
2. कुमारी शाहीन बानो वल्द जनाब मोहम्मद सादिक
3. कुमारी सकीना बानो वल्द जनाब मोहम्मद सादिक
4. कुमारी शबीना बानो वल्द जनाब मोहम्मद सलीम
5. कुमारी रबीहा बानो वल्द जनाब मोहम्मद असलम
6. कुमारी नूरजहाँ वल्द जनाब मोहम्मद नबी हुसैन शाह
7. कुमारी जन्नत बानो वल्द जनाब मोहम्मद इस्माईल
8. मास्टर शेख़ ज़मीर वल्द जनाब शेख़ चाँद
9. मास्टर मोहम्मद वल्द जनाब मोहम्मद असलम
10. मास्टर शेख़ नईम वल्द जनाब मोहम्मद फ़िरोज़ ख़ान

क्लास – दूसरी

1. कुमारी मुमताज़ परवीन वल्द जनाब शेख़ चाँद
2. कुमारी रेशमा बेग़म वल्द मरहूम जनाब शेख़ मुन्ना
3. कुमारी ख़ुशबू परवीन वल्द मरहूम जनाब शेख़ वकील
4. कुमारी मुस्कान परवीन वल्द जनाब मोहम्मद इस्माईल
5. कुमारी नाज़िया बेग़म वल्द जनाब मोहम्मद मज़हरुद्दीन
6. कुमारी खुशबू बानो वल्द जनाब मोहम्मद सादिक
7. कुमारी फूल जहाँ वल्द जनाब मोहम्मद नबी हुसैन शाह

, , ,

कहकशाँ मदरसा कांशीराम नगर के अरबी और उर्दू की तालीम हासिल कर रहे ख़्वातीन की सूची

1. कुमारी सना परवीन वल्द जनाब अब्दुल ग़फ़्फ़ार, कांशीराम नगर,
2. कुमारी नाज़िया वल्द जनाब ग़फ़्फ़ार ख़ाँ, कांशीराम नगर,
3. कुमारी रुबीना बानो वल्द जनाब जावेद ख़ाँ, कांशीराम नगर,
4. कुमारी शीरीन वल्द जनाब अब्दुल कलीम, कांशीराम नगर,
5. कुमारी नसीम बेगम वल्द जनाब असलम साहब, कांशीराम नगर,
6. कुमारी नसरीन वल्द जनाब कल्लू ख़ान, कांशीराम नगर,
7. कुमारी शबीना वल्द जनाब ग़फ़्फ़ार भाई, कांशीराम नगर,
8. कुमारी गजाला वल्द जनाब फिरोज़, कांशीराम नगर,
9. कुमारी शबीना, नानी, कांशीराम नगर,
10. कुमारी फरदीन बेगम वल्द जनाब फिरोज़ अली, कांशीराम नगर,
11. कुमारी रुखसार वल्द जनाब अनवर ख़ान, कांशीराम नगर,
12. कुमारी तमन्ना वल्द जनाब अनवर ख़ान, कांशीराम नगर,
13. कुमारी अलफ़िया वल्द जनाब अज़हर अली, कांशीराम नगर,
14. कुमारी तन्नू बेगम वल्द जनाब हनीफ़ ख़ान, कांशीराम नगर,
15. कुमारी आफ़रीन बानो वल्द जनाब जाकिर अली, कांशीराम नगर,
16. कुमारी शहनाज़ बानो वल्द जनाब सलीम ख़ान, कांशीराम नगर,
17. कुमारी परवीन, कांशीराम नगर,
18. कुमारी फरीन वल्द जनाब बब्बू ख़ाँ, कांशीराम नगर,
19. कुमारी आशना वल्द जनाब अख़्तर अली, कांशीराम नगर,
20. कुमारी शाहिदा बेगम वल्द जनाब फ़िरोज़ ख़ान, कांशीराम नगर,
21. कुमारी शबीहा वल्द जनाब शौक़त अली, कांशीराम नगर,
22. कुमारी सितारा वल्द जनाब शेख़ असलम, कांशीराम नगर,

- - - - -

23. कुमारी सब्बो वल्द जनाब शेख़ अनवर, कांशीराम नगर,
24. कुमारी नगमा वल्द जनाब मरहूम शेख़ वकील, कांशीराम नगर,
25. कुमारी शहनाज़ बेगम वल्द जनाब मरहूम शेख़ वकील, कांशीराम नगर,
26. कुमारी रेशमा वल्द जनाब अब्दुल सलीम, कांशीराम नगर,
27. श्रीमति शकीना बेगम ज़ौज़े जनाब अनवर ख़ान, कांशीराम नगर,
28. श्रीमति फरीदा ज़ौज़े जनाब अब्दुल कलीम, कांशीराम नगर,
29. कुमारी शबाना वल्द जनाब ईनामुल्लाह ख़ान, कांशीराम नगर,

बैतुलमाल ज़कात फंड से एक साला वज़ीफ़े के लिये नामांकित बेवा ख़्वातीन

नोट :- इन बेवाओं को बैतुलमाल फ़ाउंडेशन की तरफ़ से प्रति माह 50 रुपये का वज़ीफ़ा अप्रेल 2007 से एक वर्ष के लिये दिया जायेगा।

1. श्रीमति जुलैख़ा बी (65 वर्ष) ज़ौज़े मरहूम मोहम्मद शरीक, कांशीराम नगर,
2. श्रीमति आमेना बेगम, संतोषी नगर,
3. श्रीमति मुन्नी बेगम, राजातालाब
4. श्रीमति जमीला बेगम, छोटापारा,
5. श्रीमति जमीला बेगम, बैरन बाज़ार,
6. श्रीमति तायरा रियाज़, बैजनाथपारा,
7. श्रीमति जुबैदा बेगम ज़ौज़े मरहूम शेख़ सरताज, कांशीराम नगर,
8. श्रीमति जाहिदा बेगम (35 वर्ष) ज़ौज़े मरहूम शेख़ शफ़ीक, कांशीराम नगर,
9. श्रीमति शक़ीला (40 वर्ष) ज़ौज़े मरहूम मोहम्मद क़दीर, कांशीराम नगर,
10. श्रीमति अख़्तर बानो (50 वर्ष) ज़ौज़े मरहूम मोहम्मद सलीम, कांशीराम नगर,

'ज़कात अमीरों की फ़क़ीरों पर कोई इनायत (एहसान) या मेहरबानी नहीं है क्योंकि ये हमारे इस्लामी एक़तेसादी निज़ाम (इस्लामी आर्थिक तंत्र) का अहम जुज़ (अंश) है और उमरा (दौलतमंद) कि तरफ़ से कोई क़ाबिले शुक्रिया बात या फ़क़ीर के लिए ज़िल्लत (अपमान) व रूसवाई (बदनामी) की बात नहीं है, ज़कात को अल्लाहताआला ने इसलिए फ़र्ज़ किया है ताकि अमीरों और मोहताजों के दरम्यान तवाज़ुन (संतुलन) मलहूज़ (बना) रहे। माल तो हक़ीक़तन (वास्तव में) अल्लाह का है और अमीर इस पर अल्लाह के नायब (सुपरवाईजर) है और फ़क़ीर अल्लाह का कुनबा (कुटुम्ब) है और अल्लाह को अपना वह नायब सबसे ज़्यादा पसंद है जो उसके कुनबे पर सबसे ज़्यादा नेकी करने वाला हो और ये नेक फ़रीज़ा (कर्त्तव्य/अनिवार्यतः पालन की शर्त) है, अहसान और बख़्शिश नहीं है।'

छत्तीसगढ़ बैतुलमाल फ़ाउंडेशन को अपनी सेवाओं या अन्यथा दिये गये सहयोग के कारण प्रशंसा पत्र प्रदान करने के लिये नामांकित व्यक्ति

1. डॉ. अशोक जैन (आई. स्पेशलिस्ट)
2. डॉ. अशोक चांडक (आई. स्पेशलिस्ट)
3. डॉ. वी.के. अग्रवाल (आई. स्पेशलिस्ट)
4. डॉ. श्रीमति एस. नक़वी (मेडिकल)
5. डॉ. श्रीमति ए. परवीन (मेडिकल)
6. डॉ. प्रहलाद जीरानी,
   डायरेक्टर, महाराणा प्रताप होम्योपैथी मेडिकल कॉलेज, रायपुर
7. डॉ. योगेश श्रीवास्तव साहब (मेडिकल)
8. श्री राजेन्द्र खटोर साहब (कपड़ा व्यापारी)
9. श्री ए.के. ध्रुव साहब, सहायक परिवहन आयुक्त
10. श्री जी.डी. पांडे साहब, क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी रायपुर
11. जनाब सिराजुद्दीन साहब (बिज़नेसमेन)
12. जनाब डॉ. अयाज़ सिद्दीक़ी साहब (मेडिकल)

नोट :- फ़ाउंडेशन इन सब महानुभवों द्वारा दिये गये सहयोग के लिये उनका अत्यंत आभारी है

छत्तीसगढ़ बैतुलमाल फ़ाउंडेशन के अधीन विभिन्न इकाईयों में कार्यरत कर्मचारी

1.	श्रीमति अफ़साना ख़ान (बी.ए.)	मदरसा टीचर, कांशीराम नगर
2.	कुमारी शबाना (सिलाई डिप्लोमा होल्डर)	सिलाई टीचर, फ़ाउंडेशन सिलाई केन्द्र
3.	श्रीमति नसीम ख़ान	सुपरवाईज़र, फ़ाउंडेशन सिलाई केन्द्र
4.	श्रीमति शहनाज़ परवीन (सिलाई डिप्लोमा होल्डर)	सिलाई टीचर, कांशीराम नगर, सिलाई केन्द्र
5.	श्रीमति साबरा बेग़म	अरबी उर्दू टीचर, मदरसा कहकशाँ कांशीराम नगर
5.	कुमारी शबनूर	हेंड वर्क टीचर
6.	श्री रहीम ख़ान	चौकीदार, फ़ाउंडेशन सिलाई केन्द्र

छत्तीसगढ़ बैतुलमाल फ़ाउंडेशन को दान में अथवा अस्थायी रूप से दी गई सिलाई मशीन देने वाले व्यक्तियों के नाम

1.	श्रीमति डॉ. जकिया तसनीम ख़ान,	उषा मशीन	स्थायी रूप से
2.	जनाब अब्दुल रज़्ज़ाक़, संजय नगर,	उषा मशीन	स्थायी रूप से
3.	जनाब एज़ाज़ अमजद, राजातालाब,	सिन्नी मशीन	स्थायी रूप से
4.	जनाब हाजी मोहम्मद फ़ारुख़ वारसी,	मेरिट मशीन	अस्थायी रूप से
5.	जनाब हाजी जलील कुरैशी, बैरन बाज़ार	मेरिट मशीन	अस्थायी रूप से
6.	श्रीमति एस. सिद्दीकी,	सिंगर मशीन	अस्थायी रूप से
7.	जनाब मोईन कुरैशी,	उषा मशीन	अस्थायी रूप से
8.	श्रीमति अफ़साना ख़ान, बैरन बाज़ार	सिन्नी मशीन	अस्थायी रूप से
9.	सी.बी.एफ़. द्वारा क्रय,	नई मशीन	स्थायी रूप से
10.	सी.बी.एफ़. द्वारा क्रय,	नई मशीन	स्थायी रूप से
11.	सी.बी.एफ़. द्वारा क्रय,	नई मशीन	स्थायी रूप से
12.	सी.बी.एफ़. द्वारा क्रय,	नई मशीन	स्थायी रूप से
13.	सी.बी.एफ़. द्वारा क्रय,	नई मशीन	स्थायी रूप से
14.	जनाब हाजी जलील कुरैशी, बैरन बाज़ार	उषा मशीन	अस्थायी रूप से
15.	जनाब हाजी जलील कुरैशी, बैरन बाज़ार	क्रॉस स्टीज़ मशीन	अस्थायी रूप से

]]]]]

छत्तीसगढ़ बैतुलमाल फ़ाउंडेशन के सिलाई केन्द्र, बैरन बाज़ार में सिलाई प्रशिक्षणार्थीयों के नाम

(दिनांक 31.03.2007 की स्थिति में)

1. कुमारी सलमा वल्द जनाब मोहम्मद सलाम, बैरन बाज़ार,
2. कुमारी शाहिस्ता बेगम वल्द जनाब इरशाद अहमद, बैरन बाज़ार,
3. श्रीमति शीरीन बेगम ज़ौज़े जनाब नवाब ख़ान, बैरन बाज़ार,
4. कुमारी रूहमा बेगम वल्द जनाब जहीरुल हक, छोटापारा,
5. श्रीमति अफ़साना बेगम ज़ौज़े जनाब सलीमुद्दीन, मोमिनपारा,
6. श्रीमति हसीना ख़ान, टिकरापारा,
7. कुमारी निलोफ़र वल्द जनाब जियाउर्रहमान, बैरन बाज़ार,
8. कुमारी सालेहा तबस्सुम वल्द जनाब मोहम्मद इस्माईल, बैरन बाज़ार,
9. कुमारी आयशा फ़ातिमा वल्द जनाब मोहम्मद इब्राहीम ख़ान, बैरन बाज़ार,
10. कुमारी शाज़िया फ़ातिमा वल्द जनाब मोहम्मद इब्राहीम ख़ान, बैरन बाज़ार,
11. कुमारी रुख़सार वल्द जनाब साबिर अली, बैरन बाज़ार,
12. श्रीमति लक्ष्मी राय ज़ौज़े जनाब देवाशीष राय, बैरन बाज़ार,
13. कुमारी बुशरा शीरीन वल्द जनाब मुर्तुजा हसन, बैजनाथपारा,
14. कुमारी यास्मीन बेगम वल्द जनाब मोहम्मद ख़लील, बैरन बाज़ार,
15. श्रीमति जरीना ख़ातून ज़ौज़े जनाब हाफ़िज़ गुलाम सरवर, बैजनाथपारा,
16. कुमारी चौधरी संध्या रानी, फ़ाफाडीह,
17. कुमारी यास्मीन सैय्यदा वल्द जनाब सैय्यद अबू बकर, फाफाडीह,
18. श्रीमति इशरत क़ाज़ी ज़ौज़े जनाब सुहैल क़ाज़ी, बैरन बाज़ार,
19. कुमारी रफ़ीक़ा नाज़ वल्द जनाब जलालुद्दीन, पंडरी,
20. कुमारी शोबी नाज़ वल्द जनाब अब्दुल हई, पंडरी,
21. कुमारी सुमन सिन्हा वल्द जनाब नेत्रराम सिंह, पुलिस लाईन,
22. कुमारी सोनल श्रीवासन वल्द जनाब नरेश श्रीवासन, न्यू राजेन्द्र नगर,
23. कुमारी नाज़िया बानो वल्द जनाब अब्दुल सफ़ी, नेहरू नगर,
24. कुमारी रूबी अंजुम वल्द जनाब सलीम ख़ाँ, बैरन बाज़ार,
25. कुमारी कुमुदनिशिका वल्द जनाब गुरुशेर, बैरन बाज़ार,

छत्तीसगढ़ बैतुलमाल फ़ाउंडेशन के सिलाई केन्द्र, कांशीराम नगर में सिलाई प्रशिक्षणार्थीयों के नाम

(दिनांक 31.03.2007 की स्थिति में)

1. कुमारी नाज़मा, कांशीराम नगर,
2 कुमारी अफ़साना, कांशीराम नगर,
3. कुमारी खुशबू, कांशीराम नगर,
4. कुमारी माधुरी, कांशीराम नगर,
5. कुमारी सरोज, कांशीराम नगर,
6. कुमारी सबा, कांशीराम नगर,
7. कुमारी अंजुम, कांशीराम नगर,
8. कुमारी शबाना, कांशीराम नगर,
9. कुमारी रूपा, कांशीराम नगर,
10. कुमारी कुरैशा, कांशीराम नगर,

महिलाओं के लिये सुनहरा अवसर घर बैठे स्वरोज़गार के लिये

ज़रदोज़ी, हेन्डवर्क, इम्ब्रायडरी, मशीन इम्ब्रायडरी, लेडीज़ टेलरिंग एवं फ़ैशन डिज़ाइनिंग कोर्सेस का प्रशिक्षण चालू है

नवीन डिज़ाइनों का आधुनिक तकनीक द्वारा प्रशिक्षण

संपर्क करें

फ़ैन्सी इम्ब्रायडरी एण्ड फ़ैशन डिज़ाईनिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट,

22/3, कुंजे आफ़ियत, सामुदायिक भवन के पास, बैरन बाज़ार, रायपुर (छ.ग.)

फोन : 0771-6453552

छत्तीसगढ़ बैतुलमाल फ़ाउंडेशन की गतिविधिया तस्वीरों की ज़बानी

सी.बी.एफ. की एम्बुलेंस

नूरानी स्कूल में मेडिकल कैम्प

लेडिज़ समर कैम्प

ज़कात फंड से नूरानी स्कूल के बच्चों की फीस का चेक दिया गया

हाजियों का इस्तेक़बाल

सी.बी.एफ. द्वारा आँखों का ऑपरेशन

सी.बी.एफ. सदस्यों द्वारा ब्लड डोनेशन

उर्दू परीक्षाओं का आयोजन

सी.बी.एफ. द्वारा महिला मेडिकल कैम्प के उद्घाटन का दृश्य

सी.बी.एफ. द्वारा महिला मेडिकल कैम्प के उद्घाटन का दृश्य

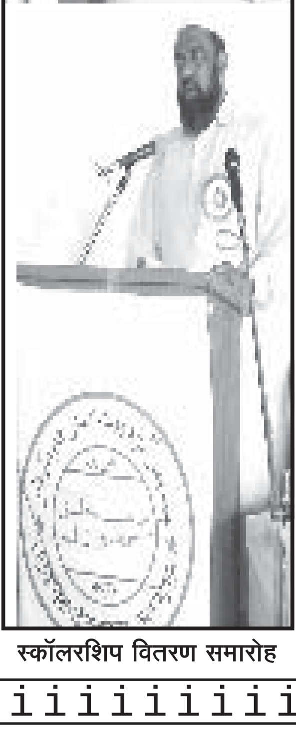

स्कॉलरशिप वितरण समारोह

सी.बी.एफ. द्वारा आयोजित स्कॉलरशिप वितरण समारोह

तराना -ए- मिल्ली

चीन व अरब हमारा, हिन्दोस्तां हमारा।
मुस्लिम है हम, वतन है सारा जहां हमारा॥
तौहीद की अमानत सीनों में है हमारे।
आसां नहीं मिटाना नाम व निशां हमारा॥
दुनिया के बुतकदों में पहला वह घर ख़ुदा का।
हम इस के पासबां है, वह पासबा हमारा॥
तेगों के साए में हम पल कर जवां हुए है।
खंजर हलाल का है क़ौमी निशां हमारा॥
मगरिब की वादियों में गूंजी अज़ां हमारी।
थमता न था किसी से सीले ख़ां हमारा॥
बातिल से दबने वाले ऐ आसमां नहीं हम।
सौ बार कर चुका है तू इम्तेहां हमारा॥
ऐ गुलसितानें अंदूल्स वह दिन है याद तुझको।
था तेरी डालियों में जब आसमां हमारा॥
ऐ मौजे दजला! तू भी पहचानती है हम को।
अब तक है तेरा दरिया अफ़साना ख़्वां हमारा॥
ऐ अर्ज़े पाक! तेरी हुरमत पर कट मरे हम।
है ख़ूं तेरी रगों में अब तक रवां हमारा॥
सालारे कारवां है मेरे हिजाज़ अपना।
इस नाम से है बाक़ी आरामें जां हमारा॥
इक़बाल का ताराना बांगे दरा है गोया।
होता है ज्यादा समाया फ़िर कारवां हमारा॥

\- - -

ज़कात फ़र्ज़ है इसका मुनकिर काफिर न देने वाला फ़ासिक़ और क़त्ल का मुस्तहिक़ और अदा करने में देर करने वाला गुनाहगार व मरदूदुश्शहादत - जनाब अहमद रज़ा खान साहब फ़ाज़िल बरेलवी